डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/ म.प्र./ मन्दसौर/ 122/ 2024- 26
ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अख़बार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 56 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | रविवार 08 दिसम्बर 2024 | मूल्य 2 रुपया

मामला बीजेपी मंडल अध्यक्षों के निर्वाचन का...

भाजपा ने बदला रायशुमारी का ढर्रा..!

अब केवल कुछ लोगों से ही लिया जाएगा अभिमत, वार्ड अध्यक्षों से नहीं पूछा जाएगा

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। भाजपा में इस बार मंडल अध्यक्षो की नियुक्ति के लिए केवल कुछ लोगो से ही रायशुमारी की जाएगी। जबकि, पहले वार्ड अध्यक्षो से भी उनका अभिमत लिया जाता था। प्रदेश भाजपा से जारी नए आदेश के अनुसार केवल मंडल में निवास करने वाले भाजपा के प्रदेश पदाधिकारी, जिला भाजपा के पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष, पूर्व मंडल अध्यक्ष से ही उनकी राय पूछी जाएगी। इस अनुसार एक-एक मंडल में 8-10 से ज्यादा नेताओ से रायशुमारी नहीं की जाएगी। भाजपा के अंदरखाने की बात करे तो अब यही चर्चा चल रही है कि भाजपा ने इस बार फिर रायशुमारी का ढर्रा बदल दिया है।

प्रदेश भाजपा द्वारा जारी आदेश के अनुसार संबंधित मंडल के अध्यक्ष, मंडल क्षेत्र में निवासरत जिला पदाधिकारी, भाजपा प्रदेश पदाधिकारी, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, पार्टी अथवा मोर्चा के राष्ट्रीय पदाधिकारी, मोर्चा जिलाध्यक्ष, वर्तमान नगर परिषद, नगर पालिका के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक, सह संयोजक, जिला पंचायत के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जनपद पंचायत के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जिला पंचायत के सदस्य, पूर्व प्रदेश भाजपा पदाधिकारी, पूर्व विधायक, पूर्व सांसद, पूर्व जिला अध्यक्ष, निगम मंडल के पूर्व अध्यक्ष, निवृत्तमान मंडल अध्यक्ष से रायशुमारी की जाएगी। इनसे भी केवल उसी मंडल की रायशुमारी की जाएगी, जिस मंडल में वे निवासरत है। केवल सांसद और विधायक से उनके क्षेत्र के सभी मंडलो के लिए राय पूछी जाएगी।

जिले में चार मंडल और बढ़ेंगे...

प्रदेश भाजपा के निर्देशो को देखा जाए तो मंदसौर जिले में चार नए मंडलो का निर्माण हो सकता है। गाईड लाईन के मुताबिक 50 से 60 पोलिंग पर एक मंड्ल बनाया जाना है। जबकि, मंदसौर जिले में कई ऐसे मंडल है, जिनमें 100 के करीब पोलिंग है। ऐसे में मंदसौर ग्रामीण और दलौदा के कुछ पोलिंग को मिलाकर एक और नया मंडल बनाया जा सकता है। इसी तरह के जिले के अन्य बड़े मंड्लो में से कुछ पोलिंगो को निकालकर नए मंडल बनाए जा सकते है।

यातायात व्यवस्था की दुश्मन पार्किंग ही नहीं, दुकानों के बाहर रखा सामान भी है...

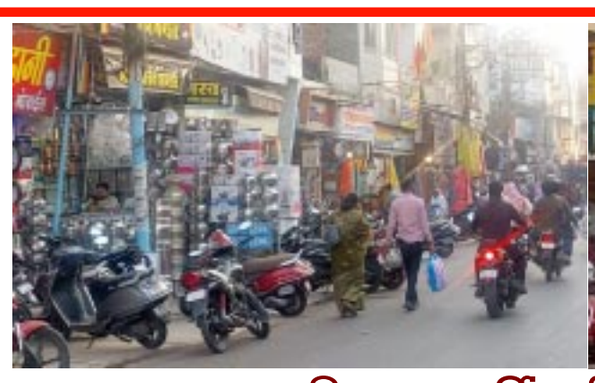

यहां खेला जाता है सिर्फ औपचारिकता का खेल

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शुक्रवार को कलेक्टर, पुलिस कप्तान और नपाध्यक्ष सहित अमले ने यातायात व्यवस्था को लेकर सड़को पर भ्रमण किया। यहां यातायात व्यवस्था बिगाड़ने वाले कारणों पर चर्चा हुई। लेकिन, इस दौरान सालों पुरानी पार्किंग की समस्या ही अधिकारियों को नजर आई। कलेक्टर अदिती गर्ग ने इसे गंभीरता से लिया और प्लानींग करने के निर्देश दिए। लेकिन, यातायात व्यवस्था बिगाड़ने में पार्किंग के अलावा सबसे महत्वपूर्ण कारण दुकानों के बाहर रखा हुआ सामान है। जिससे सड़कें कहीं 40 प्रतिशत तो कहीं 30 प्रतिशत तक सकरी हो जाती है। सबसे ज्यादा समस्या होती है शहर के प्रमुख मार्गों पर। जहां सड़क के दोनों तरफ दुकानों के बाहर व्यापारियों का सामान और उसके बाद दुकानों के बाहर रखे ग्राहकों के वाहन। अब इस स्थिति में एक चार पहिया वाहन सड़क से गुजरता है तो हार्न की आवाज और वाहनों की कतारें कई जगहों पर लग जाती है।

यूं तो जिले के हर कस्बे व नगर की अपनी बुनियादी समस्याएं है। पर शहर में सड़कों पर दुकानों का आधा सामान आने से मुख्य मार्गों पर हो रही परेशानी हर जगह समान ही है। अस्थायी व स्थायी अतिक्रमण से सभी मुख्य मार्गों पर यातायात में परेशानी हो रही है। दुकानों का सामान सड़क पर और उसके बाद खड़े वाहन आधी सड़क को घेर रहे हैं। मंदसौर के सदर बाजार, कालिदास मार्ग, सम्राट मार्ग, धानमंडी, दयामंदिर मार्ग, गौतम नगर मुख्य मार्ग सहित अन्य सभी सड़को पर एक चार पहिया वाहन के आने से ही जाम जैसी स्थिति होने लगती है।

मंदसौर की समस्या सबसे बड़ी...

मंदसौर में सदर बाजार, कालिदास मार्ग, सम्राट मार्ग, घंटाघर, दयामंदिर मार्ग, धानमंडी, डिब्बीपुरा, शुक्ला चौक व नयापुरा रोड के कुछ हिस्से में अस्थायी अतिक्रमण की समस्या कुछ ज्यादा है। यह शहर के मुख्य मार्ग हैं और दुकानदारों ने अस्थायी अतिक्रमण कर रखा है। दुकानों में सामान कम और बाहर सड़क पर ज्यादा फैला रखा है। नगर पालिका व यातायात पुलिस का दल त्योहारों व विशेष अवसरों पर ही घूमता है और अतिक्रमण को देखकर अनदेखा कर निकल जाता है। राजनीतिक संरक्षण भी इसके हटने में बाधक है।

यह हो सकता है समाधान...

सभी मुख्य मार्गों पर से बिना किसी भेदभाव के दुकानदारों पर कार्रवाई करके सामान अंदर रखवाना चाहिए। इसके अलावा दुकानदारों के स्वयं के वाहन और ग्राहकों के वाहन भी एक लाइन में खड़ा कराने के लिए दुकानों के बाहर एक निश्चित सीमा में सड़क पर सफेद लाइन खींची जाए। इससे बाहर रखे हुए दुकानों के सामान को सीधे जब्त करें और वापस भी नहीं देना चाहिए।

रास्ते का विवादः नपा की टीम ने की नपती

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर के महू रोड स्थित वृंदावन कॉलोनी में बीते दिनों बगीचे की जगह पर रास्ता बनाने की बात पर नगर पालिका में वार्ड नंबर 14 की पार्षद किरण शर्मा और कॉलोनाइजर के बीच विवाद हो गया था। इसके बाद मौके पर पहुंची नगर पालिका की टीम ने निर्माण कार्य को रुकवा दिया था। इस मामले में शनिवार दोपहर नगर पालिका की टीम मौके पर पहुंची और नपती का कार्य शुरू किया गया। इस दौरान बगीचे की भूमि और रास्ते की भूमि कि नपती की गई है।

कॉलोनाइजर की ओर से जो नक्शा नगर पालिका को दिया गया है। उसमें बगीचे की भूमि कितनी है यह देखा जाएगा। वहीं कॉलोनाइजर बगीचे की भूमि में रास्ता निकाल रहे हैं तो उनके खिलाफ नोटिस जारी का कार्रवाई की जाएगी। टीम ने इंचटेप लगाकर विवादित जगह की नपती की। बाद में इसकी विस्तृत रिपोर्ट नगर पालिका को दी जाएगी। मामले में पार्षद किरण शर्मा ने बताया कि वृंदावन कॉलोनी में बगीचे की भूमि पर कॉलोनाइजर द्वारा रास्ता निकाला जा रहा है। इस मामले में रहवासियों की मांग है कि कॉलोनी का मुख्य मार्ग है। सड़क निर्माण किया जाए, किन्तु बगीचे की भूमि पर नहीं। उन्होंने बताया कि इस संबंध में कॉलोनाइजर द्वारा फर्जी तरीके से रहवासियों के हस्ताक्षर करवाए गए। शनिवार को नगर पालिका की टीम ने नपती का कार्य किया है। आगे नियम अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

बोर्ड परीक्षा: रिजल्ट सुधारने की कवायद

मास्टर ट्रेनर को जिम्मा, तैयारी के लिए सिर्फ 3 महीने का समय

भोपाल, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा संचालित की जाने वाली 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षा फरवरी के अंतिम सप्ताह से शुरू होने वाली है। अब करीब तीन माह का समय शेष है। स्कूल शिक्षा विभाग इस बार सरकारी स्कूलों का 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम सुधारने के लिए नई पहल कर रहा है। खासतौर पर 10वीं में इस बार बेस्ट ऑफ फाइव योजना समाप्त हो गई है। इस कारण परिणाम सुधारने के लिए विभाग विशेष तैयारी में जुटा है। इस बार राज्य स्तर पर विषयवार मास्टर ट्रेनर चयनित किए गए हैं, जो जिले के सीएम राइज स्कूलों के शिक्षकों को ऑनलाइन प्रशिक्षण देकर बोर्ड परीक्षा की तैयारी कराएंगे।

साथ ही सभी स्कूलों में वार्डन शिक्षक तैनात किए जा रहे हैं, जो प्रत्येक विद्यार्थी की मॉनीटिरंग करेंगे। इस संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआई) ने सभी जिले के संयुक्त संचालक, जिला शिंक्षा अधिकारी और प्राचार्यों को बोर्ड परीक्षाओं में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने के संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए हैं।निर्देशित किया गया है कि 10वीं व 12वीं में पढ़ाने वाले शिक्षकों को किसी भी स्थिति में गैर शैक्षणिक कार्य में नहीं लगाया जाए।

वार्डन शिक्षक लेंगे पांच विद्यार्थियों की जिम्मेदारी...

प्रत्येक स्कूल में वार्डन शिक्षक बनाए जाएंगे। इन वार्डन शिक्षकों को पांच विद्यार्थियों की जिम्मेदारी दी जाएगी। ये वार्डन शिक्षक विद्यार्थियों को परीक्षा तैयारी से लेकर खान-पान,जागने व सोने से लेकर प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखेंगे। हर सप्ताह की रिपोर्ट तैयार करेंगे। साथ ही प्रत्येक सप्ताह टेस्ट लेकर तैयारी को परखा जाएगा।

परीक्षा के दौरान लगाएंगे कक्षा...

छमाही परीक्षा सोमवार से शुरू होने वाली है। इस बार परीक्षा के बाद भी कक्षाएं लगाई जाएंगी,ताकि अगले दिन के विषय की तैयारी कराई जाए। सभी गतिविधियों के स्थान पर मुख्य विषयों को पढ़ाया जाए। शीतकालीन अवकाश के दौरान तीन वर्षों के प्रश्नपत्रों का अभ्यास कराया जाए। विषय शिक्षक द्वारा निरीक्षण कर कमजोर बिंदुओं पर शैक्षणिक कार्य कराया जाए। कुछ स्कूल रविवार सहित छुट्टियों के दिन भी क्लास लगाकर तैयारी करा रहे हैं।

इनका कहना...

विभाग इस बार बोर्ड परीक्षा के परिणाम को बेहतर करने के लिए राज्य स्तर पर मास्टर ट्रेनर तैयार किए हैं। ये संभाग स्तर पर शिक्षकों को तैयारी के संबंध में टिप्स देंगे। इसके अलावा प्रत्येक स्कूल में वार्डन शिक्षक भी बनाए गए हैं।

डीएस कुशवाहा
अपर संचालक, डीपीआई

राजसात होगी संपत्ति

नये मकानो में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम नही लगाने पर सम्पत्ति राजसात होगी। पूर्व में जिला प्रशासन ने आदेश जारी किया था। नगरपालिका को अभियान चलाने के निर्देश दिए थे। हालाकि नगरपालिका मकान मालिक से 8 से लेकर 12 हजार रुपए ग्यारंटी के तौर पर अमानत राशि जमा करवा रही है। किंतु इसका पालन करवाने में नगरपालिका पूरी तरह विफल है।

पूर्व सरपंच के पुत्र का हथियारबंद बदमाशों ने किया अपहरण

पुलिस ने शरू की सर्चिंग, देर रात लगा पता

शामगढ़, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। थाना क्षेत्र के ग्राम बनी मे पूर्व सरपंच के पुत्र को हथियार बंद युवक जबरन उठा ले गए। घटना उस वक्त कारित हुई जब युवक खेत पर ट्रैक्टर चला रहा था। सूचना मिलने के बाद सुवासरा, शामगढ़ थाना पुलिस मौके पर पहुँची और पड़ताल शुरू की। बताया जा रहा है कि फिरौती के लिए घटना को अंजाम दिया गया है। इधर युवक के गायब होने के बाद से गाव में अफरा तफरी का माहौल बना हुआ है। ग्रामीणों ने चक्काजाम भी किया। जिसे पुलिस की समझाईश के बाद खोल दिया गया।

जानकारी के मुताबिक शामगढ थाना क्षेत्र के ग्राम बनी के पूर्व सरपंच चंदरसिंह के पुत्र जसवंत मंडलोई शनिवार की शाम 7 बजे अपने खेत पर ट्रैक्टर चला रहे थे। तभी हथियार बंद पांच लोग पहुँचे और उसे अपने साथ ले गए। बताया जा रहा है कि फिरौती के लिये घटना को अंजाम दिया गया। परिजनों का कहना है कि परिवार के सदस्य शम्भूसिंह के पास फोन आया था, जिसमें फिरौती मांगी गई।

बताया जा रहा है की अपहृत हुए युवक का 8 लेन के पास ही खेत है। ऐसे में पुलिस यहां सघन सर्चिंग कर रही है। फिलहाल गायब हुए युवक के बारे में कुछ भी पता नहीं लग पाया था। शामगढ़ और सुवासरा थाने की पुलिस तलाश में जुटी हुई है। पुलिस के आलाधिकारी भी लगातार नजर बनाए हुए हैं। देर रात समाचार लिखे जाने तक पूरी तरह से मामला स्पष्ट नहीं था की घटनाक्रम फिरौती के लिए किया गया है या फिर और कोई वजह है। लेकिन, इस पूरे घटनाक्रम को लेकर ग्रामीणों में भी आक्रोश बना हुआ है। उनका कहना था कि शाम 7 बजे घटना हुई है। लेकिन, पुलिस 2 घंटे बाद भी कोई सुराग नहीं लगा पाई है।

मिल गया अपहृत–प्रथम दृष्टया जो जानकारी सामने आई है, उसके अनुसार जसवंत सिंह ने अपने बड़े पापा के लड़के को फोन लगाया। उसे कहा कि पांच लोगों ने मुझे बंदूक की नोक पर खेत पर बैठा रखा है। तू घर से 50 हजार रुपये लेकर आजा.. और सिर्फ दो ही लोग खेत पर आना.. उन्होंने घर के आस-पास भी दो लोग जासूसी के लिए बैठा रखे हैं... चुपचाप आना किसी को बताना मत..वरना यह मेरे साथ कुछ भी कर सकते हैं..। फोन आते ही घर में हल्ला हो गया और परिजन खेत की ओर दौड़े.. उसके बाद जसवंत को ढूंढा गया, अब जसवंत मिल गया है और उसे पुलिस शामगढ़ थाने ले गई हैं।

चालक सहित कुएं में गिरा ट्रेक्टर, एक की मौत

नाहरगढ़, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। थाना क्षेत्र के गांव टिडवास मै ट्रैक्टर के रिवर्स गैर लगने के कारण ट्रेक्टर सहित एक व्यक्ति कुएं मै गिर गया। घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीण व प्रशासनिक अमला मौके पर पहुंचा व राहत एवं बचाव का कार्य किया

मल्हारगढ तहसील के टिडवास मे किसान ने खेत हकाई के बाद ट्रेक्टर खड़ा कर दिया था की अचानक टिड़वास निवासी बंसीलाल विश्वकर्मा उम्र 55 वर्ष से ट्रैक्टर का रिवर्स गैर लग गया। जिससे बंशीलाल ट्रैक्टर सहित कुएं में गिर गए। कुआ 50 फिट गहरा व पानी भरा हुआ था। घटना की जानकारी मिलते ही अनुविभागीय अधिकारी रविंद्र परमार, पुलिस प्रशाशन व ग्रामीण मौके पर पहुँचे व राहत व बचाव कार्य किया। खबर लिखें जाने तक बंशीलाल का शव या वो जीवितअवस्था में नहीं मिला था।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने चला ही दिया हंटर, सबसे पहले भंग की उत्तर प्रदेश संगठन इकाई...

मंदसौर/उज्जैन, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्रीय कार्य समिति में अपने ही संगठन की खामियां उजागर कर राजनीतिक जगत में हलचल मचा दी थी। स्तंभकार ने खुद भी खड़गे के भाषण को सिर्फ सुधारवादी माना था। जब खड़गे ने उत्तर प्रदेश कांग्रेस इकाई पूरी भंग करने की घोषणा की तब लगा की रीढ की हड्डी वाला नेता अध्यक्ष चुना गया है। केंद्रीय कार्य समिति की सप्ताह भर पहले हुई बैठक में खड़गे ने अपने ही संगठन की कमियां गिनाई थी। तब इसी स्तंभकार ने लिखा था कि कांग्रेस में सुधार किया जाना संभव नहीं है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस इकाई भंग कर देने के बाद कहा जा सकता है कि कांग्रेस संगठन में अब सुधारवादी परिवर्तन नजर आएंगे। साथ ही अगर आमूल चूल परिवर्तन कर नए सिरे से संगठन का गठन वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे के मार्गदर्शन में होगा तो यह माना जा सकता है की दूसरी पार्टियों के कांग्रेस में समाए स्लीपर सेल के साथ इनको संरक्षण देकर मजबूत बनाए रखने वाले मुख्य पदाधिकारी भी खड़गे के हंटर के निशाने पर होंगे।

चन्द्रमोहन भगत

राहुल गांधी का कार्य समिति की बैठक के बाद खड़गे को कांग्रेस संगठन की खामियां दूर करने और अनुशासित बनाने के लिए फ्री हैंड करना कि जिसे गलत पाए उसे पर कार्रवाई करें, के नतीजे की शुरुआत उत्तर प्रदेश से हो चुकी है। बड़ा राज्य है और विधानसभा चुनाव के पहले कांग्रेस के लिए जीत हार को अलग रख जनसाख बढ़ाने वाला वातावरण बनाना है। इसके बाद उन राज्यों का नंबर है, जहां विधानसभा चुनाव के पहले वातावरण तो कांग्रेस की जीत का बना हुआ नजर आ रहा था। नतीजे एकदम उलट आए और कांग्रेस पहले से भी एक कदम पीछे आ गई थी।

देश भर के राजनीतिक दलों और समीक्षकों की नजर में कांग्रेस संगठन की दुर्गति चर्चा का विषय बनी, पदाधिकारी हंसी के पात्र बने थे। इसके बाद भी सुधार नहीं हुआ था। हरियाणा की तरह महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को भी पूरे मुगालते से लड़ती रही कांग्रेस और भाजपा गोरिल्ला राजनीतिक बिछात बिछा चुनाव जीत गई। महा विकास अघाड़ी के तीनों दल मशीन पर आरोप लगा रहे थे। पर चुनाव के दौरान न कांग्रेस संगठन सचेत था ना ही भाजपा की रणनीति को समझ पाया था। महा विकास अघाड़ी के नेता मशीन को दोषी बता रहे हैं तब भी अपने तकनीकी जानकारी को मतदान के पहले से ही सक्रिय कर पोलिंग बूथ पर तैनात कर देना था। हो सकता है मशीन की गड़बड रही हो या नहीं रही हो। दोनों को सिद्ध करने के लिए प्रमाण भी आवश्यक हैं।

बहरहाल तीन दशक बाद राष्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष ने कम से कम अपनी कमियों को स्वीकारने के साथ सुधार प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। इकाई उत्तर प्रदेश की भंग की गई है, सचेत सभी राज्यों के संगठन हो गए हैं। आगाज़ तो बेहतर कहा जा रहा है पर अंजाम जानने के लिए थोड़ा इंतजार करना होगा। जाहिर है राज्य की काम कर रही संगठन इकाई को भंग करने के बाद नए पदाधिकारी बनाए ही जाएंगे, तब ही अंजाम नजर आएगा। क्योंकि निष्पक्ष आकलन तभी हो पाएगा कि जब नई बनाई गई संगठन की इकाई के पदाधिकारी भंग की गई कार्यकारिणी से बेहतर और अधिक सक्रिय है। देखते जाइए आगे आगे होता है क्या ? अभी तो उत्तर प्रदेश से संगठन इकाई भंग करने की शुरुआत हुई है।

बगैर लाइसेंस चल रही दुकान सील

खाद्य सुरक्षा विभाग ने की कार्रवाई; सैंपल लिए

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शनिवार दोपहर शहर के विजय टॉकीज चौराहा स्थित मुरैना गजक भंडार दुकान पर खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम पहुंची। जहां टीम ने दुकानदार से गजक निर्माण के लिए जारी किया लाइसेंस मांगा। मगर दुकानदार के पास कोई भी दस्तावेज या लाइसेंस नहीं पाया गया। जिस पर खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने दुकान को सील कर दिया।

दरअसल कलेक्टर हिमांशु चन्द्रा के निर्देश पर खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम जगह-जगह खाद्य पदार्थों के सैंपल ले रही हैं और निरीक्षण कर रही है। इसी कड़ी में टीम शनिवार को उक्त दुकान पर पहुंची थी। करीब एक माह से शहर के बीचों-बीच यह दुकान संचालित हो रही है। कार्रवाई के दौरान मुरैना गजक भंडार के संचालक विदिशा निवासी गौरव राय भी मौजूद रहे। जो दस्तावेज उपलब्ध नहीं करा पाए। इस दौरान खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने गजक के सैंपल भी लिए है, जिन्हें लैब में टेस्ट के लिए भेजा जाएगा।

मामले में खाद्य सुरक्षा अधिकारी यशवंत शर्मा ने बताया कि कलेक्टर के निर्देश पर कारवाई को अंजाम दिया गया है। करीब एक माह से यह बिना लाइसेंस के दुकान संचालित हो रही थी। यहां से सैंपल लिए गए हैं। साथ ही जब तक उक्त दुकान संचालक दुकान का लाइसेंस नहीं लेता है, तब तक दुकान सील रहेगी। इस संबंध में प्रकरण एडीएम कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा और बिना अनुमति दुकान संचालक पर नियमानुसार जुर्माने की कार्रवाई भी की जाएगी।

विचार-मंथन

संवेदनशील राज्य पंजाब में सुरक्षा पर सवाल...

पंजाब अलगाववादी गतिविधियों के लिहाज से अब भी संवेदनशील राज्य है। पिछले कुछ समय से फिर कनाडा आदि देशों में रह रहे कुछ अलगाववादी सिख खालिस्तान की मांग उठाने लगे हैं। उसका कुछ असर पंजाब में भी देखा गया। हालांकि सरकार ने चुस्ती दिखाई और ऐसे तत्वों पर लगाम कसने में कामयाब हुई। मगर पिछले कुछ समय से पंजाब में आपराधिक गतिविधियां बढ़ गई हैं, दिनदहाड़े और सरेआम किसी को गोली मार देने में भी अपराधियों को कोई हिचक नहीं होती। ऐसे वातावरण में पुलिस से अधिक चौकस रहने की अपेक्षा की जाती है। मगर पूर्व मुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल पर जिस तरह स्वर्ण मंदिर परिसर में जानलेवा हमला हो गया, उससे जाहिर है कि पुलिस ने उनकी सुरक्षा के अपेक्षित इंतजाम नहीं किए थे। जिस व्यक्ति ने उन पर गोली चलाई वह खालिस्तान समर्थक पूर्व आतंकवादी है। रामरहीम के आपराधिक मामले में सुलह करवाने के आरोप में अकाल तख्त ने सुखबीर सिंह बादल को तनखैया घोषित कर गुरुद्वारे में सेवा करने और कीर्तन सुनने का आदेश दिया था। उसी का पालन करते हुए स्वर्ण मंदिर परिसर में वे सेवा दे रहे थे। एक व्यक्ति ने उसी वक्त उन पर हमला करने की कोशिश की। गनीमत थी कि वहां सादी वर्दी में मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने उसे दबोच लिया। इस तरह गोली बादल को न लग कर दीवार पर जा लगी। हालांकि स्वर्ण मंदिर परिसर में उस तरह श्रद्धालुओं की तकनीकी जांच नहीं होती, जिस तरह अन्य अनेक पूजा स्थलों पर की जाती है। श्रद्धालु मुक्त रूप से परिसर में प्रवेश कर सकते हैं। पर सुरक्षा के लिहाज से परिसर में सैकड़ों सुरक्षाकर्मी तैनात रहते हैं। यह अच्छी बात है कि श्रद्धा के मामले में वहां सरकारी हस्तक्षेप नहीं है, मगर सुखबीर बादल वहां किसी सामान्य श्रद्धालु की तरह नहीं गए थे। उनकी सुरक्षा को लेकर किसी तरह की लापरवाही की अपेक्षा नहीं की जा सकती। गनीमत है कि सादी वर्दी में तैनात सुरक्षाकर्मियों ने उस हमले को नाकाम कर दिया, पर यह सवाल अपनी जगह बना हुआ है कि आखिर बंदूक लेकर कोई शख्स कैसे पूर्व मुख्यमंत्री के करीब तक पहुंच गया। अगर उसे परिसर में प्रवेश से पहले ही पकड़ लिया जाता, तो वह गोली चलाने में कामयाब ही न हो पाता। दूसरी बात, कि अगर मंदिर परिसर में सादी वर्दी में प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी तैनात थे, तो उन्हें उस व्यक्ति को पहचानने में इतनी देर कैसे हो गई कि वह बादल के करीब तक पहुंच गया। पंजाब सीमावर्ती राज्य होने के कारण भी बहुत संवेदनशील है। अमृतसर तो बिल्कुल पाकिस्तान सीमा से लगा हुआ है। यह भी छिपी बात नहीं है कि अलगाववादी तत्वों के तार पाकिस्तानी दहशतगर्दों से भी जुड़े हुए हैं। जिस व्यक्ति ने बादल पर हमला किया, उसके बारे में भी बताया जा रहा है कि खालिस्तान आंदोलन के दौरान पाकिस्तान गया था। ऐसे में पुलिस और सुरक्षाबलों की मामूली लापरवाही भी बड़ी घटना का कारण बन सकती है। पंजाब में बढ़ती आपराधिक गतिविधियों पर काबू न पा सकने की वजह से स्वाभाविक ही वहां की राज्य सरकार पर सवाल उठते रहे हैं। सुखबीर बादल पर हमले के बाद फिर से सुरक्षा व्यवस्था और खुफिया तंत्र पर अंगुलियां उठने लगी हैं। हमला करने वाले की बादल पर गोली चलाने के पीछे मंशा चाहे जो रही हो, पर चिंता की बात है कि वह सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरी का फायदा उठाने में कामयाब हो गया।

नेपाल ने बीआरआई के नए फ्रेमवर्क पर किए हस्ताक्षर

अरुणिम भुयान

नेपाल और चीन ने बुधवार को एक नए बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) फ्रेमवर्क सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए। ये न तो अनुदान पर आधारित है और न ही ऋण पर बल्कि सहायता वित्तपोषण पर आधारित है, तो सवाल उठता है कि इसमें क्या शामिल है। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली की चीन यात्रा के दौरान इस नए समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। वार्ता के दौरान नेपाली प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व ओली के आर्थिक और विकास सलाहकार युवराज खातिवाड़ा और विदेश मंत्री आरजू राणा देउबा ने किया जबकि चीनी प्रतिनिधिमंडल में चीन के विदेश मंत्रालय के उच्च पदस्थ अधिकारी शामिल थे। हालांकि नेपाल और चीन ने 12 मई, 2017 को बीआरआई फ्रेमवर्क समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। चीन ने 2019 में कार्यान्वयन योजना का पाठ आगे बढ़ाया था। लेकिन मुख्य रूप से ऋण देनदारियों को लेकर नेपाल की चिंताओं के कारण कोई और प्रगति नहीं हुई। नेपाल ने चीन को स्पष्ट कर दिया था कि वह बीआरआई परियोजनाओं को लागू करने के लिए वाणिज्यिक ऋण लेने में दिलचस्पी नहीं रखता है। बीआरआई एक वैश्विक अवसंरचना विकास रणनीति है जिसे चीनी सरकार ने 2013 में 150 से अधिक देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में निवेश करने के लिए अपनाया था। इसे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की विदेश नीति का केंद्रबिंदु माना जाता है। यह शी की प्रमुख देश कूटनीति का एक केंद्रीय घटक है। ये चीन को अपनी बढ़ती शक्ति और स्थिति के अनुसार वैश्विक मामलों में अधिक नेतृत्व की भूमिका निभाने पर जोर देता है। पर्यवेक्षक और आधुनिक दार्शनिक मुख्य रूप से अमेरिका सहित गैर-भागीदार देशों से इसे चीन-केंद्रित अंतरराष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क की योजना के रूप में व्याख्या करते हैं। आलोचक चीन पर बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में भाग लेने वाले देशों को कर्ज के जाल में फंसाने का भी आरोप लगाते हैं। वास्तव में पिछले साल इटली बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव से बाहर निकलने वाला पहला जी-7 देश बन गया। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में भाग लेने वाले श्रीलंका को अंततः ऋण चुकौती के मुद्दों के कारण हंबनटोटा बंदरगाह चीन को पट्टे पर देना पड़ा। भारत ने शुरू से ही बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का विरोध किया है। मुख्यतः इसलिए कि इसकी प्रमुख परियोजना, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरती है। इन सब के कारण नेपाल को इस बात का डर है कि कहीं वह महंगी अवसंरचना परियोजनाओं के लिए बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव ऋण के माध्यम से चीन के ऋण जाल में न फंस जाए। पिछले एक दशक में नेपाल द्वारा चीन को दिए जाने वाले वार्षिक ऋण भुगतान में पहले से ही तेजी से वृद्धि हो रही है। अन्य ऋणदाताओं द्वारा दी जाने वाली अत्यधिक रियायती शर्तें बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव परियोजनाओं के लिए महंगे चीनी वाणिज्यिक ऋण लेना अरुचिकर बना देती हैं। दो दिसंबर को शुरू हुई ओली की चीन यात्रा से पहले सत्तारूढ़ गठबंधन सरकार के सहयोगी ओली की कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल-एकीकृत मार्क्सवादी लेनिनवादी और नेपाली कांग्रेस - चीन द्वारा भेजे गए बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव प्रस्ताव में नियमों और शर्तों को संशोधित करने के लिए गहन विचार-विमर्श में लगे हुए थे। आखिरकार, दोनों दलों के बीच यह समझौता हुआ कि नेपाल में विशिष्ट बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव परियोजनाओं को केवल अनुदान के आधार पर लागू किया जाना चाहिए। दोनों पक्षों द्वारा गठित चार सदस्यीय टास्क फोर्स (दोनों पक्षों से दो-दो) ने चीन द्वारा प्रस्तावित बीआरआई कार्यान्वयन योजना को संशोधित किया और इसे विशिष्ट परियोजनाओं तक सीमित कर दिया। फिर संशोधित योजना को ओली की यात्रा से पहले मंजूरी के लिए चीन भेजा गया। इससे यह अटकलें लगाई जाने लगीं कि क्या चीन नेपाल की उन शर्तों और नियमों से सहमत होगा, जिनमें ऋण के बजाय अनुदान के माध्यम से बीआरआई परियोजनाओं को लागू करने की बात कही गई है। बीआरआई परियोजनाओं को मुख्य रूप से ऋण, संयुक्त उपक्रम और इक्विटी निवेश के माध्यम से लागू किया जाता है। हालांकि, कुछ परिदृश्यों में अनुदान भी भूमिका निभाते हैं, हालांकि सीमित स्तर तक। अनुदान विशिष्ट उद्देश्यों के लिए प्रदान किए जाते हैं आमतौर पर छोटे पैमाने की परियोजनाओं को लक्षित करते हुए या कूटनीतिक इशारे के रूप में। लंबे विचार-विमर्श के बाद चीन ने आखिरकार नेपाल के साथ नए बीआरआई फ्रेमवर्क सहयोग समझौते में अनुदान शब्द के इस्तेमाल को स्वीकार नहीं किया। काठमांडू पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार नेपाली पक्ष ने अनुदान वित्तपोषण सहयोग पद्धति का प्रस्ताव रखा। इसे चीनी पक्ष ने संशोधित कर सहायक वित्तपोषण पद्धति कर दिया। आखिरकार, दोनों पक्षों द्वारा सहायता वित्तपोषण शब्द पर सहमति बनी। मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान के अनुसंधान फेलो तथा नेपाल से संबंधित मुद्दों के विशेषज्ञ निहार आर। नायक के अनुसार नई शब्दावली का अर्थ है कि इससे दोनों पक्षों के लिए लचीलेपन की गुंजाइश रहेगी। नायक ने ईटीवी भारत से कहा, कुछ परियोजनाओं में अनुदान अधिक और ऋण कम होगा, जबकि अन्य में ऋण अधिक और अनुदान कम होगा। उच्च जोखिम वाली परियोजनाओं में जहां रिटर्न की संभावना कम है, अनुदान का हिस्सा ऋण हिस्से से अधिक होगा। यह 60 : 40 या 70 : 30 के अनुपात में हो सकता है। उन्होंने कहा कि इससे दोनों देशों को परियोजना के आधार पर वित्तपोषण के तरीके पर निर्णय लेने की गुंजाइश मिलती है। उदाहरण के लिए रेलवे के मामले में जोखिम अधिक होगा। उन्होंने समझाया कि नेपाल के लिए लाभ कम होगा, वित्तपोषण अधिक होगा। ऐसे मामले में नेपाल अनुदान की अधिक और ऋण की कम अपेक्षा करेगा। नायक के अनुसार दोनों देशों ने मूल रूप से भारत-भूटान जलविद्युत परियोजना वित्तपोषण मॉडल को अपनाया है। इसके तहत भारत भूटान को अनुदान अधिक और ऋण कम देता है। ऋण का हिस्सा जरूरी नहीं कि भारत ही दे, बल्कि भूटान एशियाई विकास बैंक या एशियाई अवसंरचना निवेश बैंक जैसे अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण ले सकता है।

जिंदगी जीने के अंदाज सिखाने वाले कम नहीं...

प्रभात कुमार

अगर माफी मांगना जरूरी है तो वक्त की जरूरत के मुताबिक माफी मांग भी लेनी चाहिए। खुले दिल से माफी मांग ली जाए तो संबंधों का पुल सलामत रहता है। जमाने से सुनते आए हैं कि तलवार का घाव भर जाता है, लेकिन जबान से निकले शब्दों से बना जख्म कभी नहीं भरता। हालांकि वक्त के साथ यह बात अपनी प्रवृत्ति बदल रही है। जिंदगी के रास्तों पर अनेक जगह चाहे-अनचाहे मोड़ आ जाते हैं, जिनका हमें पता नहीं चलता। किसी भी रास्ते पर सही जगह मुड़ने का खास महत्त्व है। वाहन चलाते हुए भी कई बार ऐसा हो जाता है कि हम रास्ता भूल जाते हैं, सड़क पर आगे निकल जाते हैं और एकदम से बाएं या दाएं नहीं मुड़ सकते। हमें कुछ आगे जाकर वापस मुड़ने के लिए बनाई गई जगह या 'यूटर्न' से पीछे आना पड़ता है और सही रास्ता लेना होता है। खासकर लंबी दूरी की सड़कों पर कहीं भी मुड़ जाने की सुविधा हर कहीं नहीं होती। इस क्रम में कई बार काफी दूरी का सफर तय करना पड़ता है। अपनी मर्जी से कहीं भी मुड़ जाने पर तेज रफ्तार सड़कों पर जोखिम से गुजरना या फिर जुर्माना देना पड़ सकता है। जिंदगी एक दिलचस्प, अप्रत्याशित घटनाओं और संभावनाओं से भरा सफर है। इसे सुरक्षित तरीके से तय करते रहने वाले भी अनेक बार गलती से आगे, इधर या उधर चले जाने के कारण थोड़ा पीछे आते हैं और फिर सही रास्ता अपना लेते हैं, ताकि आगे बढ़ते रहें। यों भी, सही रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए अगर थोड़ी दूरी भी तय करनी पड़े, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। बल्कि यह अपने हित में होता है। इस सफर में उचित स्थिति अपने मन की बात कहकर यह आकलन कर लेने की है कि आपके शब्द सामने वाले को बुरे तो नहीं लगे या कितने बुरे लगे। अगर माफी मांगना जरूरी है, तो वक्त की जरूरत के मुताबिक माफी मांग भी लेनी चाहिए। खुले दिल से माफी मांग ली जाए तो संबंधों का पुल सलामत रहता है। जमाने से सुनते आए हैं कि तलवार का घाव भर जाता है, लेकिन जबान से निकले शब्दों से बना जख्म कभी नहीं भरता। हालांकि वक्त के साथ यह बात अपनी प्रवृत्ति बदल रही है। शब्द उन फलों की तरह हैं कि पहले भेंट कर दें, पता चले कि सामने वाले ने चख लिए, लेकिन स्वाद नहीं लगे तो फल वापस ले लिए जाएं। शब्दों में अब वह पुरानी बात नहीं रही। जिंदगी बाजार की गिरफ्त में है। कहे गए शब्द वापस लिए जा सकते हैं और उम्मीद करनी चाहिए कि इस तरह से सामने वाले को भी बेहतर लगने लगेगा। जिंदगी जीने के अंदाज सिखाने वाले कम नहीं हैं। राजनीति भी अब जिंदगी की प्रशिक्षक हो गई है। यह सिखाती है कि बात कैसे करते हैं। अवसर और परिस्थिति के अनुसार कौन-से स्वादिष्ट या बेस्वाद शब्द दूसरों को परोसने चाहिए। यह अभिनेताओं को अभिनय सिखा रही है। उन्हें समझाती है कि राजनीति में सिर्फ अभिनय नहीं करते, बल्कि बहुत समझदारी भरी कुटिलता से अभिनय करते हैं। काबिल अभिनेता भी अगर वांछित अभिनय न कर पाए, तो छोटा-सा संवाद वापस लेने के लिए मोड़ ढूंढ़ना पड़ता है। इससे मानसिक रूप से परेशानी होती है, भूख उड़ जाती है और आत्मा तड़पती है, फिर भी स्थिति ठीक होने का अभिनय लगातार करते रहना होता है। सही मोड़ काटना सीखते रहना होता है। दिग्गज व्यक्ति अनुभव के वस्त्र बदल-बदल कर, अभिनय करते-करते निर्देशक हो जाते हैं, लेकिन उन्हें भी नए मोड़ चुनने पड़ते हैं। शतरंज की बिसात पर नए मोहरे चलाना सीखना पड़ता है। कई मोड़ ऐसे भी आते हैं, जहां सार्वजनिक खेद प्रकट करना होता है। देखा जाए तो अपनी गलती पर अगर सचमुच अफसोस नहीं है, तो खेद प्रकट करना भी कई बार सही अवसर पर किया गया कुशल अभिनय होता है। जिंदगी में हर तरह का किरदार निभाना होता है जो उसी तरह के अभिनय की मांग करता है। यहां करतब भी जरूरी होते हैं। स्थिति के अनुसार एक दूसरे को स्थिर या अस्थिर करने के लिए विश्वसनीय करतब करवाए जाते हैं और कई बार तो असली मारधाड़ भी जरूरी हो जाती है, जो करनी ही पड़ती है। यह जिंदगी का खतरनाक मोड़ होता है, जिस पर आमतौर पर सभी ठहरना नहीं चाहते। ऐसी जगह रुकना एक तरह की मजबूरी होती है। पीड़ित व्यक्ति अगर शांत रहे तो बेहतर, नहीं तो फिर अनुभवी मोड़ चुनना होता है। यह मोड़ होता है 'माफी मोड़', जहां अपनी गलती का अहसास करते हुए या फिर स्थिति को सामान्य करने के मकसद से माफी मांग ली जाती है। यह तारीफ के काबिल मोड़ होता है।

सोचना भी मत... ब्रिक्स देशों ने कैसे उड़ा दिए अमेरिका के होश

ट्रंप ने ऐसी धमकी दी है। दुनियाभर में देशों के बदलते समीकरण भी अमेरिकी चिंता का एक बड़ा कारण है। ट्रम्प ने ये धमकी क्यों दी और डॉलर पर आंच आते ही अमेरिका इतना घबरा क्यों जाता है तमाम मुद्दों का आज एमआरआई स्कैन करते हैं। किसी की जेब में किसी की तिजोरी में छोटे-बड़े बैंक में, बटुए से लेकर एटीएम तक में हर जगह मौजूद खास तरह के कागज से बने नोट हर दौर में लोगों की सबसे बड़ी जरूरत रहा है। इसलिए तो दुनिया कहती भी है कि 'बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपैया'। हर चीज से बढ़कर है ये, जिसके सिक्कों की खनक हो या करारे नोटों की खुशबू हर कोई इसका दीवाना है। एक पुरानी लोकोक्ति है कि हाथी के पांव में सबका पांव होता है। जिसका अर्थ है बड़ों के साथ छोटों की भी निभ जाती है। अमेरिकी डॉलर वैश्विक व्यापार का ऐसा ही हाथी है। ब्रिक्स देश अब इस हाथी को चुनौती देने की तैयारी में हैं। यही वजह है कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने खुलकर ब्रिक्स देशों को धमकी दे दी।उन्होंने साफ कह दिया कि अगर ब्रिक्स देशों ने अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व को चुनौती देने की कोशिश की तो उन्हें 100 प्रतिशत टैरिफ झेलना पड़ेगा। यही नहीं यहां तक कह दिया कि फिर वे देश अमेरिकी बाजार तक पहुंचने का ख्वाब छोड़ दें। इस धमकी को गहराई से देखें तो समझ में आता है कि अमेरिका को अपने डॉलर का दबदबा घटता नजर आ रहा है। तभी तो ट्रंप ने ऐसी धमकी दी है। दुनियाभर में देशों के बदलते समीकरण भी अमेरिकी चिंता का एक बड़ा कारण है। ट्रम्प ने ये धमकी क्यों दी और डॉलर पर आंच आते ही अमेरिका इतना घबरा क्यों जाता है तमाम मुद्दों का आज एमआरआई स्कैन करते हैं। ब्रिक्स 2009 में स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय ग्रुप है। इसके सदस्य देश है. ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका। 2024 में इसका विस्तार हुआ और ईरान, इजिप्ट, इथियोपिया और यूएई भी इसमें शामिल हुए। ब्रिक्स देशों ने वैश्विक व्यापार के लिए अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने की दिशा में कदम उठाए हैं। इसका ताजा उदाहरण भारत और चीन द्वारा रूस से तेल खरीदना है। इस सौदे के लिए डॉलर का उपयोग नहीं किया गया। रूस यूक्रेन युद्ध के बीच मॉस्को पर अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के बाद उसे लग रहा था कि बिना डॉलर रूस का तेल बिक नहीं पाएगा, मगर ऐसा हुआ नहीं। भारत और चीन ने रूस से ताबड़तोड़ तेल खरीदा। रूस और चीन ने अमेरिकी डॉलर का विकल्प लाने की कोशिश की है। ब्राजील ने भी एक साझा करंसी का प्रस्ताव रखा था, लेकिन इस पर कोई ठोस प्रगति नहीं हुई। ब्रिक्स समिट से पहले रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने कहा था कि रूस डॉलर को छोड़ना या उसे हराना नहीं चाहता है। उसे डॉलर के साथ काम करने से रोका जा रहा है। इसलिए डॉलर की जगह किसी दूसरे विकल्प को ढूंढना मजबूरी है। डॉलर की वैल्यू कम करने की ब्रिक्स देशों की इन्हीं कोशिशों से ट्रंप भड़के हुए हैं। ट्रंप ने ब्रिक्स देशों को धमकाते हुए एक्स पर लिखा कि हमें इन देशों से ये कमिटमेंट चाहिए कि वो न तो नई ब्रिक्स करेंसी बनाएंगे। न ही शक्तिशाली अमेरिकी डॉलर की जगह किसी दूसरी करेंसी का समर्थन करेंगे। ट्रंप ने कहा कि अगर ब्रिक्स देश ऐसा करते हैं तो उन्हें 100 प्रतिशत टैरिफ का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही उन्हें शानदार अमेरिकी अर्थव्यवस्था में प्रोडक्ट बेचने को को गुडबॉय कहने के लिए तैयार रहना चाहिए। वे किसी और मूर्ख को खोज सकते हैं। इस बात की कोई संभावना नहीं है कि ब्रिक्स अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अमेरिकी डॉलर की जगह ले लेगा।

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5440

		7				9		8
	3		1	7				4
					6			
6	9	8	7	4		3		
		3		1		4		
		1		3	9	7	6	2
			4					
9				5	1		4	
4		5				1		

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5439

2	9	6	1	4	5	8	3	7
3	5	7	8	2	6	1	4	9
1	4	8	9	3	7	5	2	6
6	3	9	5	1	2	4	7	8
5	8	1	7	6	4	3	9	2
4	7	2	3	9	8	6	1	5
9	6	4	2	8	3	7	5	1
8	1	5	4	7	9	2	6	3
7	2	3	6	5	1	9	8	4

वर्ग पहेली 5440

संकेत: बाएं से दाएं
1. 7 सितंबर 1923 को यहां इंटरपोल की स्थापना हुई (3)
3. यह देश पहले फारमूसा कहलाता था जिसकी राजधानी ताइपे है (4)
6. उत्तराखंड व उत्तरप्रदेश में बहने वाली एक नदी जिसे महाकाली नदी या काली गंगा के नाम से भी जाना जाता है (3)
7. हाथ, हस्त, मखसूल (2)
8. ... (3)
10. एक बार सांस लेने का समय, पल, क्षण (2)
12. यह संसार की सबसे लंबी नदी है (लंबाई 6650 कि.मी. चौड़ाई 16 कि.मी.)(2)
14. ... (3)
16. ... (4)
17. ... (2)
18. ... (2)
20. ... (2)
21. भगवान विष्णु का पांचवा अवतार (3)
24. ... (3)
26. भिक्षा झोली, ... (2)
27. ... (3)

संकेत: ऊपर से नीचे
1. विदेश के लिए ... संबंधी नीति (3)
2. ... (3)
3. ... (3)
4. ... (3)
5. एक प्रकार का फूल (4)
9. ... (3)
11. ... (3)
13. ... (3)
15. आज्ञा, अनुमति ... (5)
19. ... (3)
21. ... (2)
22. ... (2)
23. ... (2)
25. ... (2)

वर्ग पहेली 5439 का हल

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

भगवान श्री पशुपतिनाथ महादेव मेला का समापन

मेला के उत्कृष्ट व्यापारियों को किया पुरस्कृत, गणमान्य नागरिक भी हुए कार्यक्रम में शामिल

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। 62वें भगवान श्री पशुपतिनाथ महादेव मेला का कल शनिवार को भव्य समारोह में समापन हुआ। नपा परिषद मंदसौर द्वारा आयोजित 12 नवम्बर से 8 दिसम्बर तक 28 दिवसीय मेला का समापन समारोह कल पशुपतिनाथ मंदिर के समीप स्थित कैफेटेरिया परिसर में मेला का समापन समारोह आयोजित किया गया। राज्यसभा सांसद श्री बंशीलाल गुर्जर, मंदसौर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री बसंत शर्मा, भाजपा महिला मोर्चा की वरिष्ठ नेत्री, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीमती सुषमा आर्य, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. घनश्याम बटवाल, भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष श्रीमती निर्मला गुप्ता, भाजपा मंदसौर दक्षिण मण्डल अध्यक्ष श्री अजय आसेरी के मुख्य आतिथ्य, मंदसौर नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर की अध्यक्षता एवं मेला सभापति श्रीमती भावना जयप्रकाश पमनानी, मेला समिति सदस्यगण श्रीमती राजेश सोनी ऐरावाला, दीपक गाजवा, ईश्वरसिंह चौहान, माया नीलमचंद भावसार, संगीता शैलेन्द्र गोस्वामी, दिव्या अनूप माहेश्वरी, नपा सभापतिगण निलेष जैन, दीपमाला रामेश्वर मकवाना, निर्मला नरेश चंदवानी की गरिमामय उपस्थिति में मेला में अस्थायी रूप से मनीहारी, होटल रेस्टोरेंट, झूले चकरी लगाने वाले उत्कृष्टव्यापारियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार देकर मेला समापन अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर ने कहा कि नगरपालिका परिषद ने मेला की भव्यता के लिये जो पुरुषार्थ किया है वह अनुकरणीय है। मेला आयोजन के एक माह पूर्व इस मेला की तैयारियां शुरू कर दी गई थी इससे मेले की व्यवस्थायें हर वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष ओर बेहतर रही। मंदसौर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री बसंत शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि मेला की ख्याति दूरे दूर तक फैलाने व मेला को भव्यतम रूप से आयोजित करने में मंदसौर नपा के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों कर्मचारियों ने जो परिश्रम किया है वह सराहनीय है। मेले के व्यापारियों का भी मेले की भव्यता बडाने में जो योगदान है वह अद्भूत है। भाजपा महिला नेत्री श्रीमती सुषमा आर्य ने कहा कि नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी गुर्जर की पूरी परिषद ने मेले की व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के लिये जो काम किया उससे मेला की ख्याति निश्चित रूप से और बडेगी। मंदसौर दक्षिण मण्डल अध्यक्ष श्री अजय आसेरी ने कहा कि यह खुशी का अवसर है कि 28 दिवसीय मेला आज अपने गौरव को प्राप्त करते हुए समापन की ओर अग्रसर हो रहा है। भाजपा के जनप्रतिनिधि जिस संस्था में बैठते है उस संस्था के गौरव को बढाने का काम करत है। ऐसा ही काम रमादेवी गुर्जर की पूरी परिषद ने किया है। भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष श्रीमती निर्मला गुप्ता ने कहा कि श्रीमती रमादेवी गुर्जर कीपरिषद लगभग डेढ माह से मेला की व्यवस्थाओं में लगी थी जिससे मेला भव्य रहा है मेले में व्यापारियों ने जो अपनी दुकाने लगाई है वे भी बधाई के पात्र है। वरिष्ठपत्रकार डॉ. घनश्याम बटवाल ने कहा कि पशुपतिनाथ मेला में कई वर्षो से जो दुकाने लगा रहे है वे व्यापारी बधाई के पात्र है। आज नपा उनका सम्मान कर रही है। उत्कृष्ट व्यापारियों का सम्मान होना ही चाहिये। स्वागत उद्बोधन देते हुए नपाध्यक्ष श्रीमती गुर्जर ने कहा कि मेले को भव्यतम बनाने के लिये नपा के अधिकारियों व कर्मचारियों ने जो अथक परिश्रम किया है उसके लिये मैं उन सभी के प्रति धन्यवाद अर्पित करती हूँ। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत पूज्य सिन्धी भाई बंध पंचायत के नंदूभाई आडवानी, दृष्टनंद नैनवानी, राजेश चाहुजा, कैलाश मनवानी, गोविन्द सोपरा के द्वारा दुपट्टा ओढाकर किया गया। कार्यक्रम में राजाराम तंवर, अजीजुल्लाह खान, यशवंत भावसार, रानू भावसार, नीतिन ब्रिजवानी, शांतिलाल पालीवाल, राजेश सोनी ऐरावाला, राकेश भावसार, शैलेन्द्र गोस्वामी, मेला अधिकारी पी.एस. धारवे, मेला लिपिक राजेन्द्र नीमा भी उपस्थित थे। संचालन चन्द्रशेखर नागदा ने किया व आभार मेला सभापति श्रीमती भावना जयप्रकाश पमनानी ने माना।

अजाक्स द्वारा बाबा साहेब का परिनिर्वाण दिवस मनाया

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मप्र अजाक्स जिला मंदसौर द्वारा बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस मनाया गया, इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों ने बाबा साहेब की प्रतिमा को माल्यार्पण कर व मोमबत्ती जलाकर आदरांजलि अर्पित की गई। वक्ताओं ने उनके द्वारा सामाजिक समानता, शिक्षा, और संविधान निर्माण में किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का उद्देश्य बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के जीवन, उनके संघर्ष और समाज सुधार में उनके योगदान को स्मरण करना था। वक्ताओं ने समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने और संविधान में वर्णित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए उनके योगदान को रेखांकित किया।

इस अवसर पर अजाक्स जिलाध्यक्ष प्रहलाद कुमार सूर्यवंशी ने अपने संबोधन में कहा कि आज की पीढी को बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के संघर्ष और योगदान से प्रेरणा लेनी चाहिए, उन्होंने शिक्षा के महत्व और सामाजिक न्याय के लिए उनके प्रयासों पर जोर दिया। अजाक्स के संभागीय उपाध्यक्ष जमनाप्रसाद अहिरवार ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के विचार आज भी प्रासंगिक हैं, और हम सभी को उनके दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। अजाक्स के वरिष्ठ मार्गदर्शक के.सी.सोलंकी ने कहा कि शिक्षा और जागरूकता ही समाज में व्याप्त असमानताओं को खत्म करने का सबसे बडा साधन हैं। अजाक्स के संरक्षक डॉ के आर सूर्यवंशी ने कहा कि बाबा साहेब का परिनिर्वाण हमें उनके योगदान को याद करने और उनके सपनो का भारत बनाने की प्रेरणा देता हैं। अजाक्स जिला उपाध्यक्ष रामनिवास सूर्यवंशी ने समाज के कमजोर वर्गों के लिए शासन की विशेष सहायता योजनाओं और शिक्षा प्रोत्साहन की बात कहीं, यह कदम बाबा साहब के उस संदेश को लागू करने की दिशा में उठाया गया है, जिसमें उन्होंने शिक्षा को हर वर्ग तक पहुँचाने पर जोर दिया था। कार्यक्रम में स्थानीय समाजसेवी, शिक्षाविद, और वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया और बाबा साहब की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर संभागीय उपाध्यक्ष जमुना प्रसाद अहिरवार, जिला अध्यक्ष प्रहलाद कुमार सूर्यवंशी, जिला संरक्षण डॉक्टर के. आर. सूर्यवंशी, वरिष्ठमार्गदर्शक के. सी.सोलंकी, मदनलाल चंद्रावत, जिला उपाध्यक्ष रामनिवास सूर्यवंशी, जिला संयुक्त सचिव रामलाल जाटव, जिला महासचिव रामप्रसाद ईरवार, जिला संयुक्त सचिव राकेश डांगी, मंदसौर तहसील अध्यक्ष दिनेश सूर्यवंशी, मल्हारगढ ब्लॉक अध्यक्ष राजेंद्र चौहान, चेनसिंह जमरा, रामनारायण परिहार, शोभाराम सूर्यवंशी, जगदीशचंद्र कोद्यावत, आशाराम पँवार, राकेश सूर्यवंशी, समाजसेवी दिनेश सरेड, गोवर्धनलाल परमार, सुरेशचंद्र रैदास, राजेश सुनार्थी, राकेश कुमार देवडा, मनोज सूरवंशी, अभिनन्दन सूर्यवंशी, दीपक रायकवार, यशदीप रायकवार, सुमित सोलंकी, श्याम सूर्यवंशी, वरदीचंद श्रीमाल, कार्तिक श्रीमाल, सहित अन्य सदस्यगण एवं समाजसेवी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का समापन बाबा साहब के विचारों को आत्मसात करने और उनके सिद्धांतों को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने के संकल्प के साथ हुआ।अंत में आभार जिला संयुक्त सचिव राकेश डांगी द्वारा व्यक्त किया गया।

अभा वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामगोपाल राजा आए मंदसौर जिले के दौरे पर

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामगोपाल राजा मध्यप्रदेश के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने नीमच, मल्हारगढ व मन्दसौर जिले में विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पहलवान श्री जीवन गोसर ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने डॉ बी.आर.अम्बेडकर जी के महापरिनिर्वाण दिवस पर नीमच व मल्हारगढ में बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। तथा इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने संबोधन में कहा कि यदि डॉ. अम्बेडकर नहीं होते तो भारतीय संविधान का सर्वश्रेष्ठव परिष्कृत स्वरूप नहीं होता। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने महासभा नेता उमेश कल्याणी की माताजी के निधन पर उनके घर जाकर संवेदनाएं भी व्यक्त की उनके साथ वाल्मीकि महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जीवन गोसर, राष्ट्रीय महासचिव श्री उमेश कल्याणी, राष्ट्रीय कार्यालय सचिव व भाजपा जिला महामंत्री नरेन्द्र राजा, मध्यप्रदेश के महासभा प्रदेशाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम डागोर, राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री विकास चनाल, मंदसौर जिलाध्यक्ष श्री जितेंद्र अटवाल, श्री रमेश कंडारे, श्री ओमप्रकाश घेंघट, शांतिलाल सरसिया एवं मध्यप्रदेश व राजस्थान के कई पदाधिकारी व वाल्मीकि समाज के मुख्य कार्यकर्ता तथा गणमान्य लोग साथ रहे।

कलेक्टर ने किया भादवा माता में निर्माण कार्यों का निरीक्षण

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने शनिवार को ग्राम पंचायत भादवामाता में भादवा माता संस्थान द्वारा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मास्टर प्लान के तहत करवाए जा रहे कॉरिडोर पाथवे निर्माण, प्रसादालय निर्माण, सत्संग भवन निर्माण मंदिर के सामने मंडपम निर्माण एवं भादवा माता मंदिर परिसर के पूर्व में मुख्य द्वार निर्माण कार्यों के मौके पर निरीक्षण कर, निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। कलेक्टर श्री चंद्रा ने निर्माण एजेंसी, पर्यटन विकास निगम को पाथवे, कॉरिडोर निर्माण एवं प्रसादालय निर्माण का संपूर्ण कार्य जनवरी अंत तक सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने के भी निर्देश दिए। इस मौके पर एसडीएम डॉ.ममता खेडे, डॉ.राजेश पाटीदार, सहायक संचालक जनसंपर्क श्री जगदीश मालवीय, लोक निर्माण एसडीओ श्री पंकज खराडी, जनपद सीईओ श्री राजेंद्र पालनपुरे, सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्री चंद्रा ने महामाया मां भादवामाता मंदिर में मां भादवामाता के दर्शन कर, पूजा अर्चना भी की।

पेंशनर्स महासंघ के सदस्यों के जन्मोत्सव कार्यक्रम से डे केयर सेंटर जगमगाया

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। हमारी आंखे एवं जटिल संवेदी अंग है, हमारी दृष्टि हमारे लिये मूल्यवान है। नेत्रों के कारण ही हम आसपास तथा दूर तक दृष्टि डालकर जानकारी रख सकते है। सामान्यत: नेत्र विकार बडी असुविधाएं पैदा कर सकती है। इसलिये हमें अपनी आंखों की देखभाल जरूर करनी चाहिये अन्यथा हम अंधत्व की ओर अपने जीवन को धकेलेंगे। वर्तमान में सामान्यत: वरिष्ठ व्यक्ति मोतियाबिन्द,ग्लूकोमा और मधुमेह संबंधी रेटिनोपैथी से पीडित हो रहे है। इन तीनों बीमारियों में मोतियाबिंद को ऑपरेशन द्वारा उचित उपचार किया जा रहा है किन्तु अन्य दो बीमारियां बडी जटिल है जिन्हें उपचार से ठीक करने में कठिनाई आती है।

आयुर्वेद नेत्र चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. किशोर शर्मा ने डे केअर सेंटर के मुख्य व्यवस्थापक डॉ. देवेन्द्र पुराणिक के जन्मदिन पर बोल रहे थे, उन्होनें आयुर्वेद चिकित्सा की महत्ता को बताते हुए कहा कि मनुष्य आहार, विचार पर विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि शरीर स्वस्थ बना रहे। पेंशनर महासंघ के जिला उपाध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र चन्द्रे ने अपने उद्बोधन में डॉ. पुराणिक को जन्मदिन की शुभकामनाएं व्यक्त करी। पेंशनर महासंघ के जिलाध्यक्ष श्री अशोक रामावत, पूर्व अध्यक्ष श्री श्रवण कुमार त्रिपाठी, उपाध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र चन्द्रे, नगर अध्यक्ष श्री आनन्दीलाल पण्ड्या एवं लायंस क्लब के सचिव श्री सिद्धार्थ पोरवाल ने जन्मदिवस की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के प्रारंभ में मॉ सरस्वती, भारत माता एवं भगवान धन्वन्तरि के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया। संगठन के प्रेरणा गीत के साथ शुभकामनाएं डे केअर सेंटर के सचिव श्री राजेन्द्र कुमार पोरवाल ने दी। बांसुरी वादन से मधुर संगीत की धुन से कुमार फैनी जैन ने प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि का स्वागत सर्वश्री अशोक कुमार रामावत, श्रवण कुमार त्रिपाठी, डॉ. देवेन्द्र पुराणिक, रमेशचन्द्र चन्द्रे, चन्द्रकांत शर्मा, आनंदीलाल पण्ड्या, राजेन्द्र पोरवाल, एस.एन. श्रीवास्तव, ओ.पी. मिश्रा, एस.आर. डिया, नवनीत डाबी, अंबालाल चन्द्रावत ने पुष्पहार से किया। इस अवसर पर डे केअर सेंटर के मुख्य व्यवस्थापक श्री देवेन्द्र पुराणिक को स्व अभिनंदन पत्र भेंट किया। जिसका वाचन श्री नवनीत डाबी ने किया। डे केअर सेंटर की ओर से श्री एस.एन. श्रीवास्तव के सहयोग से साफा बांधकर, शाल श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। उपस्थित वरिष्ठ नागरिक श्री राजाराम तंवर ने भी साफा, शाल श्रीफल के साथ सम्मान किया। इसके अतिरिक्त श्री राजेन्द्र पाठक, मीसाबंदी ठाकुर सुरेन्द्रसिंह खेजडिया, पूर्व उपसंचालक पशु चिकित्सा विभाग डॉ. एस.एस. भाटी, सुनील व्यास, श्रीमती शकुंतला चौहान, योग गुरू बंशीलाल टांक, अभय भटेवरा, कोमल वाणवार, लक्ष्मीनारायण सोनी, श्रीमती चन्द्रकांता सेठिया, पारसमल जैन, नाहरसिंह सिसौदिया, लक्ष्मीचंद यादव, शांतिलाल वर्मा एवं अन्य उपस्थित वरिष्ठजनों ने माल्यार्पण कर स्वागत सत्कार किया। कार्यक्रम का संचालन अम्बालाल चन्द्रावत ने किया एवं आभार श्री अजीजुल्लाह खान ने माना।

अवैध शराब सहित पकड़ा

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मल्हारगढ पुलिस ने 10 लीटर हाथ भट्टी कच्ची शराब के साथ चंदवासा निवासी अंतरसिंह पिता मानसिंह को, 16 क्वार्टर के साथ मल्हारगढ निवासी आनंद पिता पूनमचंद को, पिपलियामंडी पुलिस ने 16 क्वार्टर के साथ चावली निवासी भरतकुमार पिता जुझारलाल को, 14 क्वार्टर के साथ थडोद निवासी रामसिंह पिता कालूसिंह को, 30 क्वार्टर के साथ मुन्दे डी निवासी बबलू पिता सत्यनारायण को तथा सार्वजनिक स्थान पर शराब पीते हुए पिपलिया फाटक मोहल्ला निवासी निवासी रमेशचन्द्र पिता रामलाल को पकडा।

अनुभूति सह जागरूकता प्रेरक प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सामान्य वनमण्डल वनमण्डलाधिकारी ने बताया कि वन विभाग एवं म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, भोपाल द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले स्कूली विधार्थियों के प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम अनुभूति के इस वर्ष के शिविरों का आयोजन 15 दिसम्बर 2024 से 31 जनवरी 2025 के मध्य किया जाएगा। जिसके संबंध में अनुभूति सह जागरूकता प्रेरक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ईको सेन्टर काष्ठडिपों मन्दसौर में श्री संजय रायखेरे, वनमण्डलाधिकारी मन्दसौर एवं श्री नरेश कुमार दोहरे, वनमण्डलाधिकारी रतलाम तथा श्रीमती सरोज रोज, उप वमण्डलाधिकारी गरोठ श्री सीताराम नरगेश, उप वनमण्डलाधिकारी रतलाम की उपस्थिति में वृत्त स्तरीय मास्टर ट्रैनर श्री गया प्रसाद मिश्रा एवं श्री पदम परमार द्वारा वनमण्डल मन्दसौर, नीमच एवं रतलाम के 31 शासकीय एवं 06 अशासकीय प्रेरकों को अनुभूति सह जागरूकता प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी नवाचार करते हुवें खाद्य श्रृखला के सर्वोचतम जीव बाघ के बारे में अधिक जागरूक करने एवं जंगलो को बचाने एवं पारिस्थितिकीय तंत्र के संतुलन में बाघ की महत्वपूर्ण भूमिका से परिचय कराने के उद्देश्य से इस वर्ष की थीम 'मैं भी बाघ एवं हम है बदलाव रखी गई है। मास्टर ट्रेनर द्वारा बताया गया कि अनुभूति शिविर कार्यक्रम में आने वाले विधार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियां जैसे पक्षी एवं वन्यप्राणी दर्शन, प्रकृति पथ भ्रमण, प्रकृति की पाठशाला, पर्यावरण रक्षा हेतु प्लास्टीक बेग का उपयोग नहीं करते हुवें कपडे के थैले का उपयोग, वानिकी गतिविधयों की जानकारी, वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण के महत्व का रेखांकन, विधार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान, प्रश्नोत्तरी, वन अमले का परिचय, पर्यावरण रक्षा की सामूहिक शपथ के साथ पुरुस्कार वितरण आदि गतिविधयां आयोजित की जावेगी।

उज्जैन योग शिविर की वर्चुअल बैठक सम्पन्न

असाध्य बीमारियों का समाधान इंटिग्रेटेड योग (समृद्धि प्रदायक योग) से -परमार्थ देव

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के परम शिष्य एवं पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मुख्य केन्द्रीय प्रभारी स्वामी परमार्थ देव जी के उज्जैन आगमन की तैयारी को लेकर 6 दिसम्बर की शाम 7 बजे मध्यप्रदेश पश्चिमी क्षेत्र के सभी जिलों की एक वर्चुअल बैठक आयोजित हुई जिसने राज्य प्रभारी राजेन्द्र आर्य द्वारा बताया गया कि तीन दिवसीय नि:शुल्क शिविर को लिए उज्जैन समिति द्वारा व्यापक तैयारी की गई।

मध्यप्रदेश पश्चिमी क्षेत्र के नीमच, मन्दसौर, रतलाम, इन्दौर, देवास, आगर मालवा, खरगोन, शाजापुर, सिहोर, बडवाह, धार, झाबुआ, अलिराजपुर आदि जिलों से आने वाले सभी योग प्रभारियों एवं योग साधक, साधिकाओं, के ठहरने के लिए आवास सहित दोनों समय के लिए भोजन नाश्ता आदि की उत्तम व्यवस्था की गई है! 10 दिसम्बर से प्रतिदिन प्रात: 6:15 से 8:00 बजे तक योग प्राणायाम से विभिन्न बिमारियों का रोगोपचार बताया जावेगा दोपहर के सत्र में आरोग्य सभा के पश्चात अपरान्ह 3 से सायं 8 बजे तक पतंजलि योग टीम के साथ रामघाट, हरसिद्धि, महाकाल लोक, मंगलनाथ, काल भैरव, भर्तहरी गुफा आदि के दर्शन एवं भ्रमण का आयोजन रहेगा! दि. 12 दिसम्बर को प्रात: कालीन योग सत्र के बाद 8 : 30 पर समापन पश्चात खानगी के साथ भोजन के पेकेट दिये जायेगे सम्पूर्ण व्यवस्था उज्जैन टीम द्वारा की जावेगी। वर्चुअल बैठक में सभी जिलों सहित नीमच से योगाचार्य एवं संवाद प्रभारी लाक्षाकार बालकृष्ण सोलंकी, पतंजलि योग समिति जिला प्रभारी कमला शंकर भट्ट जीरन, आनंद शर्मा आदि ने भाग लिया। उपरोक्त जानकारी प्रदान करते हुए श्री सोलंकी एवं योग प्रेमी गुणवंत गोयल ने बताया कि तीन दिवसीय नि: शुल्क आवासीय शिविर में भाग लेने हेतु शिविरार्थी 9 दिसम्बर को सायंकाल नागझिरी चौराहा स्थित होमगार्ड परेड ग्राउंड उज्जैन पहुंचे।

मारपीट, 4 पर केस दर्ज

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। खेत की मेड के विवाद में मारपीट के मामले में पुलिस ने चार आरोपियों पर केस दर्ज किया। फतेहपुर निवासी प्याचंद बावरी ने नारायणगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि खेत के पडोसी विनोद पिता मिश्रीलाल बावरी ने बोला कि मेरी मेढ की ओर पत्थर क्यों डाले। मैंने मना कर दिया तो विनोद के साथ ही रामनिवासी लखन व रितेश भी आए। चारों ने मिलकर गाली-गलौज की व लात-घुसों से पीटा, जिससे आंख, पीठ, हाथ पर चोंटे आई। पुलिस ने चारों आरोपियों पर केस दर्ज किया।

डॉ. आम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि दी

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। वीर मातादिन अम्बेडकर सेना द्वारा भारतीय संविधान के शिल्पकार, सिंबल ऑफ नॉलेज, समतामूलक समाज के प्रणेता, भारत रत्न से अलंकृत, महामानव बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतीमा पर माल्यार्पण एवं मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि दी गई।

इस दौरान वीर मातादिन अम्बेडकर सेना द्वारा विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर वीर मातादिन अम्बेडकर सेना के अध्यक्ष थानसिंह घावरी, संस्थापक विनोद खैरालिया, मंगल कोटियाना, विनोद छपरी, मुकेश हंस, विजय चनाल, सतीश खैरालिया, पवन दलौर, जगदीशचन्द्र कोडावत आदि ने उपस्थित होकर बाबा साहेब को श्रद्धासुमन अर्पित किये।

मां-बेटी को पीटा, केस दर्ज

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मां-बेटी के साथ मारपीट के मामले में पुलिस ने मां बेटी के खिलाफ केस दर्ज किया। मल्हारगढ स्टेशन मार्ग निवासी बेबीकुंवर पति वीरेन्द्रसिंह गौर ने मल्हारगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई मेरे बेटे आदित्य ने परिवार के खिलाफ जाकर पिपलियामंडी निवासी टीना से प्रेम विवाह किया था। इसलिए मैंने बेटे को टीना के साथ अलग रहने की बोला था। इसी को लेकर टीना के साथ ही उसकी मां सुधा ने घर में घुसकर मेरे व मेरी बेटी प्रियंका के साथ मारपीट की। जिससे चोंटे आई। पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया।

घोड़ी दाना खेलते चार को पकड़ा

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने घोडी दाना खेलते 4 आरोपियों को पकडा। पिपलिया पुलिस ने पिपलियापंथ श्मशान घाट के पास घोडी दाना (पासे) खेलते हुए योगेशकुमार पिता हुकुमचंद करोंदिया व लाखनसिंह पिता गोविन्दसिंह राजपूत को एवं खेडा खदान मार्ग पर घोडी दाना खेलते जेतपुरा निवासी जगदीश पिता मांगीलाल नायक व नेनोरा निवासी राहुल पिता प्रकाश नायक को पकडा। इनके कब्जे से नकदी व जुआ सामग्री बरामद हुई। पुलिस ने दोनों के खिलाफ केस दर्ज किया।

कलेक्टर ने किया भादवामाता में ई-केवाईसी शिविर का निरीक्षण

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने शनिवार को भादवामाता के भ्रमण दौरान ग्राम पंचायत परिसर में राजस्व महाअभियान के तहत आयोजित विशेष राजस्व शिविर का निरीक्षण कर राजस्व अमले द्वारा किसानों के ईकेवाईसी एवं फॉर्मर रजिस्ट्री कार्य का जायजा लिया। इस मौके पर एसडीएम डॉ.ममता खेडे, सहायक संचालक जनसंपर्क श्री जगदीश मालवीय सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार उपस्थित थे। इस मौके पर कलेक्टर श्री चंद्रा ने किसान धन्नालाल से चर्चा कर, ई-केवाईसी एवं फार्मर रजिस्ट्री करवाने से होने वाले लाभ के बारे में जानकारी ली। उन्होंने शिविर में उपस्थित अन्य किसानों को भी अपनी फार्मर रजिस्ट्री एवं ईकेवाईसी अनिवार्य रूप से करवाने की समझाईश दी। इस निरीक्षण के दौरान शिविर में 30 से अधिक किसानों की फार्मर रजिस्ट्री एवं ई-केवाईसी का कार्य पूर्ण कर दिया गया था। ग्राम रायसिंहपुरा के पटेल ने साफा बांधकर कलेक्टर का स्वागत किया।

सामूहिक विवाह आधुनिक युग की प्रमुख आवश्यकता है-संत सत्यानंद महाराज

सिखवाल समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन में 7 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। महंगाई के इस आधुनिक युग में समय श्रम एवं धन की बचत के उद्देश्य से सिखवाल ब्राह्मण समाज विकास समिति के तत्वाधान में सिखवाल ब्राह्मण समाज का आर्दश सामूहिक विवाह सम्मेलन 7 दिसंबर शनिवार अम्रपाली रिजॉर्ट (निजी रिजोर्ट) मेडिकल कॉलेज के सामने नीमच पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सुखानंद तीर्थ के संत सत्यानंद महाराज ने कहा कि श्री राम का जन्म के लिए श्रृंगी ऋषि ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था ।आधुनिक युग में मोबाइल आने के बाद युवा वर्ग अपने संस्कारों को भूल गया है। समाज विकास के लिए आधुनिक युग में सामूहिक विवाह प्रमुख आवश्यकता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के संस्कारों को जीवन में आत्मसात करेंगे तभी समाज विकास कर सकता है ।भगवान राम की बहन माता शांता के आशीर्वाद से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सुख शांति के साथ संपन्न हुआ जो समाज की एकता का परिचायक है। समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजमल पांडे ने कहा कि सामूहिक विवाह का शुभारंभ भीलवाड़ा से नि:शुल्क प्रारंभ किया गया था। इस सामूहिक विवाह में भी कन्या पक्ष से कोई शुल्क नहीं लिया गया जो समाज विकास के लिए प्रेरणादाई कदम है।इस अवसर पर नीमच नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष राकेश जैन पप्पू, पार्षद राजेश लालवानी, शशि कल्याणी, योगेश कवीश्वर, हनुमान नागला , बाबूलाल नागला, डूंगरमल उपाध्याय, गोपाल शर्मा पाली, मदन पांडे, जगदीश ईसरमंड अहमदाबाद, सांवरमल सुखवाल, महिला अध्यक्ष अपेक्षा शर्मा, मप्र महिला मंडल की उपाध्यक्ष मेघा उपाध्याय रतलाम एवं अध्यक्ष दिनेश शर्मा सहित बडी संख्या में देश भर से समाज जन सहभागी बने ।सिखवाल समाज ब्राह्मण समाज का जिले में तीसरा एवं भारतवर्ष का 92 वां सामूहिक विवाह सम्मेलन के लिए विवाह योग्य युवक यूवतियों का पंजीयन हेतु ब्राह्मण समाज विकास समिति नीमच केदिनेश शर्मा ,ओम प्रकाश शर्मा, प्रमोद पांडे, ऋतुराज शर्मा,सम्मेलन प्रभारी पार्षद योगेश कवीश्वर, नीता कविश्वर, गोपाल शर्मा,अपेक्षा शर्मा, शोभा शर्मा, चंदा शर्मा, लक्ष्मी पांडे,प्रीति पांडे ,पुष्प लता व्यास आदि पदाधिकारीयों ने आवेदन के माध्यम से विवाह योग्य 6जोडे युवक युवतियों का पंजीकरण किया था ।इस अवसर पर तुलसी और शालिग्राम भगवान का विवाह भी हुआ। जिसके यजमान श्रीमती मीना प्रमोद पांडे थे। सामूहिक विवाह सम्मेलन में मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, भीलवाडा हैदराबाद रेला झालावाड पाली अहमदाबाद गुजरात जयपुर अजमेर सहित देशभर से समाज जनों ने उत्साह दिखाया।

दशपुर के लोगों आओ

मिल गौरव दिवस मनाओ
यह 8 दिसंबर आया
खोजा तो हमने पाया
इतिहास ने इस दिन को
दशपुर की नींव बताया
इतिहास के इस अतीत को
अपना वर्तमान बनाओ
दशपुर के लोगों आओ
दुल्हन सा नगर सजाओ
इतिहास को साकार करो
मिल गौरव दिवस मनाओ
दशपुर के लोगों आओ
मिल गौरव दिवस मनाओ

नंदकिशोर राठौर, मंदसौर

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	233	2101	2451
उडद	41	5199	5680
सोयाबीन	2500	3550	4325
गैहु	1303	2800	3180
चना	62	5300	6450
मसुर	46	4701	6000
धनिया	175	4700	7021
लहसुन	8000	11500	31000
मैथी	268	4180	5940
मुंगफली	3000	3650	5300
अलसी	954	5721	6120
सरसो	102	5200	5676
तारामीरा	4	4400	4500
इसबगोल	34	10251	12701
प्याज	12000	1580	4000
कलोंजी	4	10001	18280
तुलसी बीज	2	17990	17990
डॉलर	27	7501	10700
तिल्ली	24	9901	12420
जौ	3	2510	2510
मटरसुखी	2	2424	4001
असालीया	1	11500	11500
चियाबीज	39	9051	13500

मप्र में 11 और छत्तीसगढ़ में 4 नए केंद्रीय विद्यालय खोले जाएंगे

सभी पीएम-श्री स्कूलों के रूप में करेंगे काम

भोपाल, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। केंद्र सरकार देश में 58 नए केंद्रीय विद्यालय खोलने की घोषणा की है। इनमें से 11 विद्यालय मध्य प्रदेश और 4 केंद्रीय विद्यालय छत्तीसगढ में खुलेंगे। इन विद्यालयों के खोलने पर अगले आठ सालों में आठ हजार करोड रुपये से अधिक खर्च होंगे। यह सभी पीएम-श्री स्कूलों के रूप में कार्य करेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में शुक्रवार को हुई कैबिनेट बैठक में यह अहम फैसला लिया गया है। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि ये 85 नए केंद्रीय विद्यालय देश के 19 राज्यों में खोले जाएंगे।

82 हजार से अधिक विद्यार्थियों को मिलेगी शिक्षा–उन्होंने बताया कि 85 नए केंद्रीय विद्यालयों के खुलने से इनमें 82 हजार से अधिक छात्रों को शिक्षा मिल सकेगी। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कैबिनेट के इस फैसले को शिक्षा क्षेत्र को बढावा देने की दिशा में बडा कदम बताया है।

केंद्रीय विद्यालय को अपग्रेड भी किया जाएगा–मंत्री ने कहा कि इस फैसले से 21 वीं सदी के लिए ग्लोबल सिटिजन को तैयार करने में मदद मिलेगी। कैबिनेट ने कर्नाटक के शिमोगा जिले में पहले से मौजूद एक केंद्रीय विद्यालय को अपग्रेड भी किया है। वहीं 28 नए नवोदय विद्यालयों के खुलने से 15 हजार से अधिक छात्रों को इनमें प्रवेश मिलेगा।

1300 से अधिक लोगों को मिलेगी नौकरी–साथ ही 1300 से अधिक नए लोगों को शिक्षक सहित दूसरे पदों पर नौकरी भी मिलेगी। मौजूदा समय में 1,256 केंद्रीय विद्यालय हैं। इधर नए केंद्रीय विद्यालय खोले जाने के निर्णय पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया है।

मप्र में 11 नए केंद्रीय विद्यालय खुलेंगे–1. अशोक नगर 2. नागदा (उज्जैन) 3. मैहर 4. तिरोडी (बालाघाट) 5. बरघाट (सिवनी) 6. निवाडी 7. खजुराहो (छतरपुर) 8. झिंझरी (कटनी) 9. सबलगढ (मुरैना) 10. नरसिंहगढ (राजगढ) 11. सेंट्रल एकेडमी पुलिस ट्रेनिंग परिसर, कान्हासैया (भोपाल)

छत्तीसगढ में हो जाएंगे 41 केंद्रीय विद्यालय–केंद्रीय विद्यालय प्रबंधन के मुताबिक अब प्रदेश में रायपुर के तीन स्कूल समेत छत्तीसगढ में कुल 41 केंद्रीय विद्यालय (केवी) हो जाएंगे। अभी तक प्रदेश में 37 केंद्रीय विद्यालय संचालित हैं। प्रदेश के बस्तर, बिलासपुर और सरगुजा संभाग में लगातार केंद्रीय विद्यालयों की संख्या बढाने की मांग की जा रही है। अभी तक केंद्रीय विद्यालयों की प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक सेक्शन में 40-40 सीटें होती थीं। अब इसमें कटौती कर 32-32 कर दिया गया है।

100 दिवसीय टीबी अभियान नि-क्षय शिविर का शुभारंभ

जिले के नि-क्षय मित्र एवं टीबी चैंपियन को शाल एवं श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम का शुभारंभ जिला चिकित्सालय मंदसौर से हुआ। इस दौरान सांसद श्री सुधीर गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार, मंदसौर विधायक श्री विपिन जैन, कलेक्टर श्रीमती अदिति गर्ग, सीईओ जिला पंचायत श्री राजेश कुमार जैन मौजूद थे।

भारत सरकार द्वारा देश के 347 चयनित जिलों में 100 दिवसीय नि-क्षय शिविर अभियान 07 दिसम्बर 2024 से प्रारंभ किया जा रहा है जो आगामी 24 मार्च 2025 विश्व क्षय दिवस तक संचालित किया जायेगा। अभियान के अंतर्गत जिला मंदसौर को भी सम्मिलित किया गया है। इस दौरान सांसद श्री गुप्ता सांसद ने कहा कि जिले मे कार्य कर रहे समस्त एनजीओ टीबी मुक्त भारत मे जुडकर कार्य करें। समस्त उद्योगो मे कार्यरत श्रमिको के लिए एक दिन उसी फैक्ट्री मे जाकर स्क्रीनिंग की जावे। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पाटीदारने कहा कि पंचायत स्तर पर समस्त जनप्रतिनिधियों से आग्रह किया जाऐगा कि निक्षय मित्र बनकर उपचाररत टीबी मरीजो को फुड बास्केट प्रदान किया जाऐ, साथ ही समस्त सरपंचों के साथ जिला स्तर पर एक विशाल टीबी मुक्त कार्यशाला का आयोजन किया जावेगा। विधायक मंदसौर श्री जैनद्वारा अपने उद्बोधन मे कहां गया कि जिस तहर भारत को पोलियों मुक्त किया गया है, उसी तरह टीबी को भी समाप्त कर टीबी मुक्त भारत बनाऐंगे।

कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग द्वारा कहा कि 100 दिवसीय अभियान के बारे मे संक्षिप्त मे बताया गया। जिसमे अभियान के तहत 60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति, विगत 5 वर्षो के टीबी मरीज व उनके सम्पर्क व्यक्ति, मधुमेह के रोगी, 18.5 के कम बीएमआई वाले, धुम्रपान करने वाले व्यक्ति, नशा करने वाले व्यक्ति, जेल, वृद्धाश्रम, अनाथालय, रैन बसेरा, आवासीय विद्यालयों, स्लम, उद्योग एवं अस्थायी आवासीय श्रमिकों की टीबी की स्क्रीनिंक कर एक्स-रे एवं सीबीनॉट जाँच करवाई जाऐं। जिले के निक्षय मित्र एवं टीबी चैंपियन को शाल एवं श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया गया। मंच पर उपस्थित समस्त जनप्रतिनिधीयों एवं अधिकारियों द्वारा निक्षय मित्र बनकर टीबी मरीजों को फुड बास्केट प्रदान किया गया। टीबी रथ को हरी झण्डी दिखाकर टीबी जागरूकता रथ को रवाना किया गया, जिसके साथ जिला चिकित्सालय से शहर के प्रमुख मार्गो से टीबी जागरूकता हेतु रैली निकाली गई। जिसमें जिला चिकित्सालय के चिकित्सकगण, पैरामेडिक्ल स्टॉफ, अधिकारी/कर्मचारी, शासकीय बीएससी नर्सिंग कॉलेज की छात्राऐं, श्रीजी नर्सिंग एवं मेरिकल कॉलेज के छात्र-छात्राऐं, आशा कार्यकर्ता, एनसीसी केछात्र, एवं एनजीओ के सदस्यो ने रैली मे भाग लिया।

मंदसौर को संभाग बनाओ आंदोलन का अगला चरण शुरू

महारानी लक्ष्मीबाई विद्यालय में मंदसौर नागरिक मंच के प्रतिनिधियों ने किया संपर्क, 1150 कार्ड प्रदान किए

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर नागरिक मंच द्वारा मंदसौर को संभाग बनाने की मांग को लेकर अभियान के अगले चरण में हायर सेकेंडरी विद्यालयों में विद्यार्थियों, शिक्षक स्टाफ और अभिभावकों के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम पोस्टकार्ड अभियान शुरू किया गया है। इस कडी में सीएम राईज महारानी लक्ष्मी बाई स्कूल में मंदसौर नागरिक मंच के प्रतिनिधि गण गुरुचरण बग्गा, नरेंद्र अग्रवाल, ब्रजेश जोशी, उमेश पारिख, रत्नेश कुदार, प्रदीप भाटी पुष्पेन्द्र भावसार आदि ने सम्पर्क किया।

स्कूल प्राचार्य के सी सोलंकी की उपस्थिति में छात्राओं को पोस्ट कार्ड सौंपे गए। उन्हें मुख्यमंत्री के नाम मंदसौर को संभाग बनाने की मांग के पोस्टकार्ड लिखने के लिए प्रेरित किया गया साथ ही उनके अभिभावकों को और स्कूल स्टाफ से भी आव्हान किया गया। मंदसौर नागरिक मंच कोर ग्रुप के वरिष्ठमार्गदर्शक गुरुचरण बग्गा ने विद्यार्थियों और स्कूल स्टाफ को संबोधित करते हुए कहा कि मंदसौर और आसपास के अंचल की भौगोलिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर राज्य शासन को मंदसौर को संभाग बनाना चाहिए। अविभाजित मंदसौर जिले के अनेक गांवों से संभाग मुख्यालय की इतनी दूरी है कि अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां जिले वासियों को होती है। नरेंद्र अग्रवाल ने कहा कि मंदसौर को यदि संभाग बनाया जाता है तो इस क्षेत्र के हर वर्ग को इसका लाभ मिलेगा चाहे व्यापारी वर्ग हो प्रशासन या आमजन। शीघ्र ही जिले भर मंक और नीमच जिले में भी यह आंदोलन शुरू किया जाएगा। ब्रजेश जोशी ने कहा कि मंदसौर नागरिक मंच के माध्यम से 2 अक्टूबर से मंदसौर को संभाग बनाने का यह चरणबद्ध आंदोलन चल रहा है। गांधी चौराहा पर पूरे एक माह चले पोस्टकार्ड अभियान में लगभग 35 हजार पोस्टकार्ड लिखे गए जिसमें नगर और आसपास के 80 संगठन और संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इस अभियान में भाग लिया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के विगत मंदसौर प्रवास के दौरान उन्हें मंदसौर नागरिक मंच की ओर से ज्ञापन भी दिया गया। विद्यालय के प्राचार्य के.सी. सोलंकी ने कहा कि मंदसौर क्षेत्र की यह एक वाजिब मांग है निश्चित ही जन भावनाओं को देखते हुए और जिले की भौगोलिक स्थिति को दृष्टिगत रखकर राज्य शासन मंदसौर को संभाग बनाने पर जरूर विचार करेगा। मंदसौर नागरिक मंच द्वारा विद्यालय में 1150 पोस्ट कार्ड प्रदान किए गए। इस अवसर पर यहां उपस्थित छात्राओं ने भी यह संकल्प लिया कि वे सभी छात्राएं पोस्टकार्ड लिखेंगी अपने अभिभावकों को भी प्रेरित करेंगी। इस अवसर पर महेश त्रिवेदी, रेणुका आचार्य, कुंदन सांखला साहित स्टाफ के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे। यह जानकारी कार्यालय प्रभारी प्रदीप भाटी ने दी है।

श्री राम विवाह पंचमी महोत्सव धूमधाम से मनाया

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। अगहन सुदी (शुक्ल पक्ष) पंचमी को भगवान श्री राम का मिथिला में जनक नंदिनी भगवती सीता के साथ भगवान श्री राम का विवाह हुआ था जो हजारों वर्षों बाद भी आज पर्यन्त सनातन धर्मावलम्बी मनाते आ रहे है।

तेलिया टेंक स्थित श्री रिषियानन्द आश्रम पर 6 दिसम्बर को बडी धूमधाम से यह पर्व मनाया गया। भगवान राम-सीता का एक दूसरे को वरमाला पहनाते हुए चित्र का पूजन अर्चन आरती की गई। श्री महेश गेहलोद द्वारा गोस्वामी तुलसीदासजी रचित श्री रामचरित मानस में वर्णित विवाह प्रसंग का भजन कीर्तन के साथ व्याख्या सहित वर्णन किया। आश्रम और सदुरु भगवान रिषियानन्द सरस्वती के अनुयायियों के अतिरिक्त बडी संख्या में मातृशक्ति अन्य श्रद्धालुओं ने जिस उत्साह-उल्लास से विवाहोत्सव मनाया ऐसा लग रहा था मानो मिथिला में ही उत्सव हो रहा हो। सबसे विशेष संयोग यह रहा कि श्री महेश गेहलोद ब्रह्मलीन सदगुरु देव श्री रिषियानंदजी के परम भक्त होने के साथ ही आप श्री रिषियानन्द सुंदरकाण्ड के संयोजक है आप के द्वारा प्रति रविवार दिन को दोप. 1 से 3 बजे तक रामायण कथा चान करते हे जिसमें 8 दिसम्बर रविवार को अगला प्रसंग राम विवाह का ही होने से भगवान राम और गुरु महाराज रिषियानन्दजी के प्रति श्रद्धा भक्ति विश्वास को और अधिक बल मिला। ऐसा शुभ प्रसंग अकस्मात होने से जो श्री राम चरित मानस का पाठ करते है और उपस्थित श्रद्धालुओं में बडा हर्ष छा गया।

विवाहोत्सव में रामायण प्रवक्ता डॉ. दिनेश तिवारी, योग गुरु बंशीलाल टांक, ट्रस्ट कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल सोनी, कन्हैयालाल पण्ड्या, कन्हैयालाल गोठवाल, अशोक पाठक, भूपेष पाण्डे, नरेन्द्र पण्ड्या, रिषियानंद सुंदरकाण्ड सदस्यगण मनदीप राणा, कैलाश टांडी, घनश्याम सोनी, आरआई राजेश खरे, सरस नागर, रामनारायण गंधर्व, मनोज शर्मा, मातृशक्ति आदि बडी संख्या में रामभक्त सम्मिलित हुए।

बाईक की टक्कर से राहगीर की मौत

मनासा, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। क्षेत्र के गांव बरडिया में शुक्रवार देर शाम एक सड़क हादसा हो गया। हादसे में बाइक सवार ने पैदल जा रहे राहगीर को टक्कर मार दी। इस हादसे में राहगीर गम्भीर रुप से घायल हो गया। जिसे तत्काल एम्बुलेंस से पहले मनासा के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। गम्भीर हालत को देखते हुये उसे नीमच के बड़े अस्पताल रेफर किया गया। मिली जानकारी के अनुसार राजेश उर्फ राजू पिता देवीलाल जाति बंजारा निवासी दरकपुरा देर शाम को मनासा से पैदल अपने घर जा रहा था। तभी अज्ञात बाइक चालक ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। शनिवार को उसने उपचार के दौरान बड़े अस्पताल में दम तोड दिया। परिजनों के आने के बाद बड़ा अस्पताल पुलिस चौकी के पुलिस कर्मी जंगदीश गिरी की मौजूदगी में मृतक के शव का पीएम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया। वही मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

ट्रक ने मारी कार को टक्कर

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। ट्रक ने कार को पीछे से टक्कर मार दी। पुलिस ने केस दर्ज किया। भीलवाडा के कपडा व्यापारी मुकेश जैन ने पिपलियामंडी थाने पर शिकायत दर्ज कराई मैं कार (आरजे 37 सीबी 7657) से मंदसौर की ओर जा रहा था। पिपलिया चौपाटी पर पीछे से आ रही ट्रक (आरजे 09 जीबी 6786) के ड्राइवर ने टक्कर मार दी। जिससे कार क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने ट्रक ड्राइवर पर केस दर्ज किया।

पिता ने पुत्र को पीटा

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पिता ने पुत्र को पीटा। पुलिस ने केस दर्ज किया। शक्करखेडी निवासी अर्जुन पिता मदनलाल बागरी ने नाहरगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि पत्नी सीमाबाई नाराज होकर पीयर बांसखेडी चली गई। इसी बात को लेकर मेरे पिता मदनलाल ने गाली-गलौज की व मेरे साथ मारपीट कर लकडी की सिर पर मारी, जिससे खून निकलने लगा। पुलिस ने मदनलाल पर केस दर्ज किया।

एड्स जागरूकता सप्ताह के तहत कार्यक्रम सम्पन्न

पिपलियामंडी, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पिपलिया मंडी में विश्व एड दिवस के अवसर पर महाविद्यालय मे विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन हुआ। एड जागरूकता में युवाओं की भूमिका विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के बाद महाविद्यालय के रेड रिबन क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों के द्वारा एडजागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली का आयोजन महाविद्यालय परिसर से ग्राम खोखरा तक किया गया। रैली में स्वयंसेवकों के द्वारा एडजागरूकता हेतु नारे लगाते हुए रैली निकाली गई एवं ग्राम वासियों व राहगीरों को पेम्पलेट वितरण किया गया तथा एड बिमारी के प्रति जागरूक रहने के लिए अपील की गई। कार्यक्रम में रासेयो के स्वयंसेवक छात्रों सत्यप्रकाश एवं कूनाल ने मुख्य भूमिका निभाई एवं रैली का संचालन किया। महाविद्यालय में एडजागरूकता सप्ताह मनाया जा रहा है जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं का भी आयोजित हो रही है। प्रोफेसर सचिन कारपेंटर से प्राप्त सूचना के अनुसार एडजागरूकता को लेकर रेड रिबन क्लब के द्वारा छात्र छात्राओं के बीच विभिन्न प्रतियोगिताएं एडस से बचाव रोकथाम एवं जागरूकता के उद्देश्य से संपन्न हो रही हैं। दिनांक 21 से 5 दिसम्बर तक निबंध प्रतियोगिता, एड जागरूकता स्लोगन राईटिंग प्रतियोगिता, एड जागरूकता भाषण, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता संपन्न हुई। सभी छात्रों ने बडी संख्या में इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। महाविद्यालय में एड जागरूकता के विषय में व्याख्यान का आयोजन भी किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता श्रीमती अंतिम बाला जैन, काउंसलर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मल्हारगढ ने एडएचआईवी के कारण एवं बचाव के संबंध में जानकारी दी। साथ ही उन्होंने संक्रमित ब्लड एवं सुई के इस्तेमाल से बचने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में रासेयो कार्यक्रम अधिकारी प्रो सचिन कारपेंटर, प्रो अरुण नरगावे, डॉ कन्हैयालाल लोहार, एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक छात्र उपस्थित रहे।

गीता जयंती समारोह, नेत्र शिविर एवं सर्वरोग निदान समिति का गठन

अखावत गीता जयंती समारोह अध्यक्ष, डॉ.मंडलोई स्वागताध्यक्ष एवं अग्रवाल सर्वरोग निदान शिविर संयोजक नियुक्त

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। धर्मधाम गीता भवन ट्रस्ट द्वारा आयोजित सात दिवसीय 52वां गीता जयंती समारोह एवं 49वां नेत्र शिविर 17 दिसम्बर 2024 से गीता भवन में लगाया जाएगा। गीता जयंती समारोह एवं नेत्र शिविर समिति में इस बार श्री राजेन्द्रसिंह अखावत (करनी इंटरनेशनल स्कूल) को अध्यक्ष निरूपित किया गया है। आयोजन के स्वागताध्यक्ष डॉ. प्रवीण मण्डलोई बनाये गये तथा श्री देवेन्द्र मरच्या एडवोकेट उप स्वागताध्यक्ष तथा मार्गदर्शक वरिष्ठ पत्रकार पं. ब्रजेश जोशी है। तथा समिति में भगवानदास विजयवर्गीय, ओम चौधरी, ठा. सूरजप्रकाशसिंह तोमर, नवनीत पारख, कन्हैयालाल सोनगरा, डॉ. रविन्द्र पाण्ड्या, राव विजयसिंह तथा डॉ. क्षितिज पुरोहित लिये गये है।

गीता भवन के संस्थापक एवं अध्यक्ष अंत. संत स्वामी श्री रामनिवासजी की प्रेरणा से इस बार 18 दिसम्बर को अनुयोग हॉस्पिटल के डॉ. योगेन्द्र कोठारी के सहयोग से सर्वरोग निदान शिविर का आयोजन किया जायेगा। इसमें विभिन्न प्रकार की जांच एवं रोगियों को नि:शुल्क दवाई का वितरण किया जाएगा। शिविर के संयोजक श्री नरेन्द्र अग्रवाल है जबकि शिविर समिति में पत्रकार प्रकाश सिसौदिया, संजय वर्मा, ब्रजेश मारोठिया, राकेश दुग्गड, जगदीश काबरा, दिलीप सेठिया तथा जितेश फरक्या को लिया गया है। धर्मधाम गीता भवन ट्रस्ट के सचिव पं. अशोक त्रिपाठी ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि गीता भवन के परम संरक्षक एवं वरिष्ठ ट्रस्टी अंर्तराष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रधान पीठाधीश्वर स्वामी श्री रामदयालजी महाराज गीता जयंती समारोह व नेत्र शिविर का शुभारंभ करेंगे। समारोह के लिये विभिन्न समिति बनाई गई है। सात दिवसीय इस समारोह में स्वामी श्री रामदयालजी के प्रवचन प्रतिदिन दिन में 1 से 4 बजे के बीच होंगे जिसमें आप गीता ज्ञान एवं जम्बूसर चरित्र कथा पर अपने प्रवचन देंगे। क्षेत्र की धर्मप्राण जनता से आयोजन में शामिल होकर धर्मलाभ लेने की अपील तथा नेत्र शिविर एवं सर्वरोग निदान शिविर का लाभ लेने की अपील गीता भवन ट्रस्ट व परिवार ने की है।

मुख्यमंत्री एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के आगमन को लेकर जिले के मण्डलों की बैठकें सम्पन्न

अटोलिया, धाकड़, दीक्षित, राणा, पाटीदार, तिवारी सहित अनेक पदाधिकारी पहुंचे मण्डलों में

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर जिले में भाजपा के नवीन जिला कार्यालय के भूमि पूजन कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वी.डी. शर्मा, संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, उप मुख्यमंत्री जगदीश देवडा के आगमन को लेकर जिला भाजपा द्वारा जिला स्तरीय बैठक के बाद अब मण्डलश: बैठको का क्रम प्रारंभ हो गया है। आज मंदसौर जिले के कई मण्डलों में भूमिपूजन कार्यक्रम को लेकर जिले के कई बडे नेता विभिन्न मण्डलों में पहुंचे ओर भूमिपूजन कार्यक्रम को ऐतिहासिक सम्पन्न करवाने की कार्ययोजना बनाई। मण्डलश: बैठको के इस क्रम में आज दिनांक 07 दिसम्बंर को भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया ने मंदसौर ग्रामीण मण्डल, बूढा मण्डल, दलौदा मण्डल में पहुँचकर भाजपा जिला पदाधिकारी शिवराज सिंह राणा, नरेंद्र पाटीदार मण्डल अध्यक्ष ईश्वरसिंह पंवार, राजेन्द्रसिंह राणा, विकास सुराणा, दिलीपसिंह तरनोद, जगदीश परमार आदि के साथ मंडलों की बैठक ली ओर अधिक से अधिक संख्या में भाजपा के वरिष्ठकार्यकर्ताओं सहित पार्टी पदाधिकारी नव मनोनित बूथ समिति के सदस्यों की भूमि पूजन कार्यक्रम में उपस्थिति सुनिश्चित करने की कार्ययोजना बनाई।

इसी प्रकार पूर्व विधायक देवीलाल धाकड ने भाजपा जिला मंत्री अजय तिवारी, मंडल अध्यक्ष अभिषेक मांदलिया के साथ दिनांक 10 दिसम्बर को मुख्यमंत्रीजी के आगमन को लेकर कार्ययोजना बनाई। इसी क्रम में सीतामऊ मंडल की बैठक लेते हुए भाजपा जिला महामंत्री राजेश दीक्षित ने लाल सिंह देवडा एवं नगर पंचायत अध्यक्ष मनोज शुक्ला की उपस्थिति में कहा कि भारतीय जनता पार्टी जिला मंदसौर के नवीन कार्यालय का भूमि पूजन दिनांक 10 दिसंबर 2024 मंगलवार को प्रात: 11:30 बजे हॉकी मैदान के सामने बायपास पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त जी शर्मा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद जी शर्मा प्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश जी देवडा सहित जिले के जनप्रतिनिधियों के कर कमलो से होने जा रहा है। हमें सीतामऊमंडल के प्रत्येक बूथ की नवगठित बूथ कमेटी को उक्त कार्यक्रम में लेकर उपस्थित होना है साथ ही सीतामऊमंडल में भाजपा के पूर्व कई बुजुर्ग वरिष्ठ कार्यकर्ता निवासरत करते हैं, उन्हें भी हमें जिला भाजपा के नवीन कार्यालय के भूमि पूजन में आमंत्रित करना है। भाजपा जिला महामंत्री राजेश दीक्षित ने सीतामऊ मंडल के मंडल अध्यक्ष, शक्ति केंद्र प्रभारी, नगर पंचायत अध्यक्ष पार्षद गणों से संख्यात्मक वृत्त लिया और अधिक से अधिक संख्या में अपने-अपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के साथ भूमि पूजन कार्यक्रम में सम्मिलित होने का आग्रह किया। इस अवसर पर जिला महामंत्री दीक्षित ने सभी शक्ति केंद्रों के साथ सीतामऊनगर के वार्ड वाइज प्रभारी तय किये और कार्यकर्ताओं को लाने हेतु वाहनों की सूची अपडेट करने के निर्देश दिए। उक्त जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी निलेश जैन ने दी।

नीमच में सशस्त्र सेना झण्डा दिवस मनाया

नीमच, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। देश एवं प्रदेश के साथ-साथ नीमच जिले में भी 7 दिसम्बर 2024 को सशस्त्र सेना झण्डा दिवस मनाया गया। झण्डा दिवस पर नीमच में जिला सैनिक कल्याण कार्यालय मंदसौर एवं भूतपूर्व सैनिकों ने कलेक्टर श्री हिमांशु चन्द्रा को झण्डा दिवस का बेज व झण्डा लगाकर सहयोग राशि एकत्रित की। झण्डा दिवस पर कलेक्टोरेट स्थित विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों को भी झण्डा व बेज लगाकर भूतपूर्व सैनिकों के कल्याणनार्थ राशि एकत्रित की गई। इस मौके पर जिला सैनिक कल्याण संयोजक कार्यालय मंदसौर-नीमच के श्री सी.एल.एम.प्रजापति, कैप्टन वली मोहम्म द, आर.सी. बोरीवाल नीमच के भूतपूर्व सैनिक श्री चतरसिह गेहलोद, श्री महेश आदि उपस्थित थे।

नशा मुक्ति के क्षेत्र में एक लाख तक पुरुस्कार

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश शासन द्वारा राज्य में नशा मुक्ति के क्षेत्र में उत्कृष्टकार्य करने वाले समाजसेवियों और स्वैच्छिक संगठनों को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य स्तरीय एवं जिला स्तरीय विवेकानंद नशा मुक्ति पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। इसमें राज्य स्तरीय पुरस्कार के रूप में 1 लाख रुपये के दो पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र दिए जाएंगे, जबकि प्रत्येक जिले में तीन पुरस्कार 10 हजार रुपये के होंगे। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण संचालनालय ने इसके लिए योग्य संस्थाओं से आवेदन आमंत्रित किए हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 18 दिसंबर 2024 है। इसे संचालनालय के पते या ई-मेल पर जमा कराया जा सकता है। जिला स्तरीय पुरस्कार के लिए आवेदन जिला कार्यालय में जमा किए जाएंगे।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के लिए ऑनलाईन आवेदन करे

मंदसौर, 07 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। जिला उप संचालक उद्यान द्वारा बताया गया कि उद्यमियों को व्यवसाय स्थापित करने के लिए झचक्ष्यए योजनान्तर्गत लहसुन प्रसंस्करण उत्पाद जैसे गार्लिक पिलिंग, गार्लिक पेस्ट, पावडर, चिप्स, संतरा ज्यूस, हल्दी पावडर, मिर्च पावडर, आंवला अचार, मुरब्बा, अमरूद जैम, जैली तथा अन्य सभी प्रकार के प्रसंस्करण उत्पाद आईल मील, दाल मील, डेयरी उत्पादों से संबंधित इकाईयों का निर्माण करने हेतू वेबसाइड http://pmfme.mofpi.gov.in `m https://agriinfra.dac.gov.in/ पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते है तथा AIF (एग्रीकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर फण्ड) योजनान्तर्गत प्राइमरी इकाई निर्माण जैसे cleaning, shorting, grading, milling, grinding, storage, drying, packing, cold, storage, pack house इत्यादि पर 03 प्रतिशत ब्याज ऋण पर अनुदान शासन द्वारा दिया जाएगा।

कार्यालय अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मंदसौर (मप्र)

क्रमांक क्यू/2024 **मंदसौर, दिनांक 06.12.2024**

विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन क्रमांक एमपी 14 एबी 2274 जो कि इस कार्यालय में राधेश्यामपिता कंवरलाल जाट, निवासी बेटीखेड़ी, पोस्ट झलारा, तहसील सीतामऊ, जिला मंदसौर के नाम से पंजीकृत है।

यह सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी की मृत्यु हो चुकी है इसलिए उक्त वाहन का अंतरण अपने नाम से करने हेतु उनकी पत्नी श्रीमती रामकन्या जाट पति राधेश्याम जाट, निवासी बेटीखेड़ी, पोस्ट झलारा, तहसील सीतामऊ, जिला मंदसौर ने इस कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया है। इस संबंध में जिस व्यक्ति को आपत्ति हो वह विज्ञप्ति प्रकाशन के सात दिवस के अंदर इस कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित अवधि के पश्चात प्रस्तुत किसी आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। अंतरण आवेदक के नाम पर कर दिया जावेगा।

अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, मंदसौर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in